प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

किसी से किसी भी तरह की प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं है। आप स्वयं में जैसे है, खुद को स्वीकारिए।
ओशो

वर्ष-03, अंक - 07 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 19 नवंबर 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

शर्मसार हुई इंसानियतः
भाईदूज के दिन जयपुर में कट्टे में मिला नवजात, नोच रहे थे कुत्ते, हॉस्पिटल में तोड़ा दम

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के जयपुर शहर से एक बार फिर शर्मसार कर देने वाला मामला सामने आया है। दरअसल, भाईदूज के दिन मानवता तब शर्मसार हो गई, जब एक नवजात बच्चा कट्टे में बंद हुआ गली में पड़ा मिला। उस नवजात बच्चे को गली के कुत्ते नोच रहे थे, बच्चे की ना तो नली कटी हुई थी और ना ही शरीर पर से खून साफकिया गया था। भाईदूज के दिन रिश्तों का ऐसा मजाक, वाकई हैरान कर देने वाला है। बता दें, यह बच्चा रोहित भारद्वाज और उनके चचेरे भाई को उनियारों के रास्ते और गोधों के रास्ते के बीच गली में कट्टे में बंद हुआ मिला।

जब रोहित और उनका भाई गली से जा रहे थे, तो उन्होंने देखा कि, कुत्ते एक कट्टे को नोच रहे हैं, इस कट्टे में से बच्चे के रोने की आवाज आ रही थी। दोनों भाई भागकर कट्टे के पास पहुंचे और उन्होंने कुत्तों को वहां से भगाया, जिसके बाद कट्टा खोलकर देखा तो उनके होश उड़ गए। उन्होंने देखा कि, एक नवजात बच्चा कट्टे में बंद था, बच्चा जोर-जोर से रो रहा था।

उसकी नाल लटकी हुई थी, यहां तक कि, उसका खून भी नहीं पौंछा गया था। जिसके बाद रोहित और उसके भाई ने चिल्लाकर लोगों को बुलाया, लोग बच्चे को गणगौरी अस्पताल ले गए, वहां से बच्चे को जेके लोन हॉस्पिटल रेफर कर दिया। वहीं, जब बच्चे को जेके लोन अस्पताल लेकर गए, तो वहां पर उसकी मौत हो गई। इस बात की सूचना लोगों ने पुलिस को दी। बता दें, बच्चे के सिर पर कुत्तों ने नोंच खाया था।

जेके लोन अधीक्षक डॉ. अरविंद शुक्ला ने बताया कि, रात साढे 9 बजे बच्चे को इमरजेंसी में लाया गया था। सिर पर नोंचने के निशान थे, काफी खून बह चुका था, सांस कम थी, शरीर नीला पड़ गया था, बच्चे की नाल के साथ प्लेसेंटा लगा हुआ था।

बाइडन के शासन में और अधिक मजबूती से आगे बढ़ेंगे भारत और अमेरिका, पीएम मोदी ने जताई उम्मीद

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और अमेरिका आने वाले समय में और अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ने को तैयार हैं। ये बात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच फोन पर हुई बातचीत के बाद सामने आई है। इस बातचीत में दोनों ही नेताओं ने अपनी भविष्य की प्राथमिकताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। साथ ही इस दौरान दोनों देशों के बीच कॉम्प्रिहेंसिव ग्लोबल स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप और भारतीय-प्रशांत क्षेत्र में फैली वैश्विक कोविड़-19 महामारी पर भी विस्तार से चर्चा हुई।

पीएमओ से मिली जानकारी के मुताबिक दोनों नेताओं के बीच फोन पर हुई बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने जो बाइडन को राष्ट्रपति चुनाव में मिली जीत की बधाई दी। उन्होंने उम्मीद जताई कि, बाइडन के शासन में अमेरिका में लोकतांत्रिक व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी। इसके अलावा पीएम मोदी ने उप-राष्ट्रपति पद के लिए चुनी गई भारतीय मूल की कमला हैरिस को भी उनकी जीत पर बधाई दी है।

तू बेकलदा का नेता है तो हम भी रायपुरिया के गुंडे है-रायपुरिया पुलिस

पुलिस की हेवानियतः पीड़ित को जान बचाने के लिए डायल 100 बुलाना पड़ा महंगा, मार-मार के सुजाए अंग, किया अधमरा, हथकड़ी से फोड़ा सिर

माही की गूंज, झाबुआ/पेटलावद।

''नाहः रायपुरिया पुलिस तेरी हेवानियत का जवाब नही'' यह बात रायपुरिया क्षेत्र के लोगो की जुबा पर रायपुरिया पुलिस की हेवानियत को देखकर कही जा रही है और वास्तविक रूप से कानून को अपने बाप की बपौती मानने वाली पुलिस की हेवानियत रूपी इस गुन्डा गर्दी से रूबरू होने पर हर किसी के रोगटे खडे हो जाएगे।

पुलिस आपकी सुरक्षा के लिए है और हमेशा सेवा के लिए तत्पर है का नारा देने वाली पुलिस जब कानून को अपने बाप की बपोती मानकर अपनी वाली पर आती है तो वर्दी की मर्यादा भूल जाते है और आम जनता में वर्दी के प्रति होने वाले सम्मान के स्थान पर, घृणा, नफ्रत और डर की जगह बना देती है, जिससे लोग पुलिस की मदत लेने में भी हिचकिचाने लगते है। नए नवेले पुलिस अधीक्षक लगातार पुलिस की गिरी हुई साख को बचाने के लिए अपराध और अपराधियों पर लगाम लगाने और पुलिस विभाग के अधिकारियों और जवानों को आम जनता से अच्छे संबंध स्थापित करने के लिए भले ही प्रयासरत हो लेकिन उनके अधिनस्तो ने उनके और वर्दी के मान सम्मान को गिराने में कोई कसर नही छोड़ी जा रही है। पुलिस द्वारा अवैध धंदेबाज़ों से उगाही और अपराध दर्ज नही करने की शिकायत आम है, वही थाने पर मामले निपटा कर वसुली का चलन सा बन गया। आलम ये है कि, पुलिस विभाग में पदस्थ कई जवानों, प्रधान आरक्षक और थाना व चौकी प्रभारीयो पर पैसे मांगने का आरोप लगते रहे है और लिखित शिकायते भी उच्च अधिकारियों को हो रही है। गत दिनो रायपुरिया थाने के प्रधान आरक्षक को शिकायत की सुनवाई के लिए मुर्गा पार्टी मांगने पर निलंबित भी किया जा चुका है।

ताज़ा मामला रायपुरिया थाने का जहा मद्दत के लिए पुलिस को बुलाना एक पीड़ित व्यक्ति को इतना भारी पड़ गया कि, पुलिस की हेवानियत एवं गुन्डा गर्दी उसकी जान पर बन आई।

साहब जल्दी आओ, ये मार देंगे जब आओगे क्या!

मंगलवार सुबह रायपुरिया थाना क्षेत्र के ग्राम बेकलदा निवासी सोहनलाल सुबह आठ बजे के लगभग बेकलदा बाज़ार में चाय पी रहा था कि, पुराने जमीन विवाद को लेकर एक महिला और तीन युवक मौके पर आकर गाली-गलौच करते हुए कहने लगे कि, कल रात तुमने घर पर पत्थर फेंके थे, बोल कर मारपीट शुरु कर दी। सोहनलाल के मौके पर खड़े लोगो की मदत से बच कर अपने घर पहुचा, जहा से सोहनलाल ने डायल 100 को कॉल कर विवाद की जानकारी देकर सुरक्षा की मांग की, लेकिन पुलिस नही पहुची इस दौरान मारपीट करने वाले सोहनलाल के घर पहुच गए और जान से मारने की धमकी देने लगे। डरे हुए सोहनलाल ने दोबारा डायल 100 को फोन कर कहा कि, ये लोग मुझे मार डालेंगे जब आओगे क्या ? बोल कर पुलिस से फिर सुरक्षा की मांग की।

पुलिस की हेवानियत से शिकार हुआ सोहनलाल का मत द्वार व जागो को सूजा दिया मार-मारकर।

डायल 100 वाले फरियादी को ही उठा लाए थाने, पुलिस ने मारपीट कर दिया हेवानियत का परिचय

मौके पर पहुची डायल 100 पहले सोहनलाल से मारपीट करने वालो के यहा गई और बिना उन पर कार्रवाई किए पीडित उर्फ फरियादी सोहनलाल के घर पहुची, जहा डायल 100 में तैनात ड्राइवर ओर पुलिस वाले ने सोहनलाल को गाली-गलौच कर कहा कि, तू बहुत शिकायत करता है, बोलकर कालर पकड़ कर गाड़ी में बिठा लिया और रायपुरिया थाने पर ले जाकर बिठा दिया, जहा सोहनलाल ने फरियादी होने का हवाला देते हुए मारपीट करने वालो पर कार्रवाई करने की मांग करते हुए 12वी तक पढे-लिखे सोहनलाल ने हाथ से लिखकर आवेदन दिया। रायपुरिया थाने पर पदस्थ कुछ पुलिस वालों और डायल 100 के ड्राइवर तथा पुलिस जवान ने सोहनलाल को थाने के दूसरे हिस्से में जहा कैमरे नही लगे हुए है ले जाकर मारपीट की और एक बार रवाना कर दिया। सोहनलाल ने थाने से जाते समय मामले की शिकायत एसपी साहब को करने की बात कही और थाने से पुलिस के छोड़ने से चला गया। शिकायत की बात से थाने में आपसी पुलिसी चर्चा में घबराए पुलिस वालों ने सोहनलाल को एक बार फिर रायपुरिया बाजार से उठाया ओर थाने पर लाकर कहा कि, तू बेकलदा का नेता है तो हम रायपुरिया के गुंडे है, तू बहुत शिकायत करता है कहकर कानून को अपनी बाप की बपोती मानकर पुलिस ने अपनी हेवानियत का परिचय देकर अपनी गुन्डा गर्दी बताकर एक निहत्ते व पीडित उर्फफरियादी को इतनी बुरी तरह मारा की इस बार मारपीट की हद पार कर दी और शरिर के मल द्वार, पुठ्ठे, जांग आदी जगह लठो से मार-मार कर ऐसे सुजा दिए की वह बिस्तर से कभी उठ ही नही पाए इतने से भी पुलिस का मन नही भरा और पुलिस वालों ने हथकड़ी से सोहनलाल का सिर तक फोड़ दिया और पुलिस की मारपीट करने के तरीके अनुसार सोहनलाल को उल्टा लेटा कर बुरी तरह से मारपीट की जिससे सोहनलाल गंभीर रूप से घायल हो गया।

हथकड़ी से मारकर फोड़ा सिर आए ? टाके।

रायपुरिया स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाकर पुलिस ने करवाया इलाज, सिर में लगे 7 टाके

मारपीट के कारण बुरी तरह घायल सोहनलाल को रायपुरिया स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाकर इलाज करवाया, जहा गम्भीर घायल सोहनलाल को सिर में 7 टाके आए। इलाज के लिए आए जवान ने अपने थाने के वरिष्ठ अधिकारीयो के अनअधिकृत निर्देश से सोहनलाल पर इतना दबाव बनाया कि, डॉक्टर को गिरने से लगी चोट बताने को कहा, जिसके बाद पुलिस ने सोहनलाल को थाने पर लाकर डराया की तेरे खिलाफ़ 354 का मामला दर्ज करके तुझे जेल भेजेंगे ओर बाद में सोहनलाल को रायपुरिया से ही शांति भंग करना बताकर 127, 151 की धारा लगा कर एसडीएम कोर्ट में पेश किया, जहा से जमानत पर छूटकर सोहनलाल घर पहुचा।

एसपी से की शिकायत

सोहनलाल ने मामले की शिकायत फ्लिहाल मोबाइल के द्वारा पुलिस अधीक्षक झाबुआ को की है, एसपी को रायपुरिया पुलिस द्वारा अपने पर हुई ज्यादती की शिकायत की है। अब ये देखना होगा की मुर्गा पार्टी मांगने वाले जवान की आडियो सुनकर प्रधान आरक्षक पर कार्रवाई करने वाले एसपी साहब इतने बड़े मामले और वर्दी पर दाग लगाने व अपनी हेवानियत के साथ कानून को अपने बाप की बपोती मानकर गुन्डा गिरी करने वाली रायपुरिया थाने की पुलिस पर क्या कार्रवाई करते है। थाने पर लगे सीसीटीवी कैमरे, डायल 100 की लोकेशन , हॉस्पिटल का रिकॉर्ड की जांच की जाए तो मामले में पुलिस द्वारा की गई ज्यादति की पूरी हकीकत सामने आ जाएगी।

जांच में भर्ती को लेकर जारी आदेशो का हवाला तक नही दिया

एक पद के लिए एक ही आवेदन वो भी बाबू के परिवार का सदस्य आखिर कैसे ?

प्राचार्य प्रसाद ने नियुक्ति से झाड़ा पल्ला फिर कैसे हुई नियुक्ति...!

माही की गूंज झाबुआ, संजय मेटवत्त

पिछले अंक में फर्जी नियुक्ति मामले में गठित टीम द्वारा की गई जांच में दर्ज बयान में लगभग सभी ने बाबू अटकान से अपनी करीबी रिश्तेदारी स्वीकारी थी, लेकिन जाच दल को इसमें कोई काला-पिला नजर नही आया, क्योकि जाच दल पर अपने ही विभाग के बड़े विभाग के अधिकारियों को बचाने की जिम्मेदारी के साथ-साथ हरे गुलाबी नोटों की पट्टी का पर्दा किया गया था, जिस कारण जाच दल ने केवल मामले को रफ-दफ करने वाली जाच कर निष्कर्ष में रामचंद अटकान को फर्जी नियुक्ति में शामिल होने से मुक्त कर दिया। जबकि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की भर्ती के लिए जारी दिशा निर्देश से साफ है कि, भर्ती प्रक्रिया विभाग प्रमुख कमिश्नर के आदेश से होना है, जिसका जाच में कोई उल्लेख नही किया।

जसमे बिंदु क्रमांक 4 में लक्ष्मीबाई खुण्डिया ने अपने कथन में बताया कि, बाबू रामचंद अटकान रिश्ते में उसका भाई है लेकिन मेरी नियुक्ति के समय रामचंद अटकान खुद भृत्य के पद पर कार्यरत थे। लक्ष्मीबाई खुंडिया ने बताया कि, उसकी नियुक्ति कलेक्टर दर पर सीधे सहायक आयुक्त झाबुआ द्वारा जनपत पंचयात पेटलावद के अध्यक्ष के प्रस्ताव के साथ आवेदन के आधार पर किया गया, जबकि लक्ष्मीबाई की नियुक्ति को जनपत पंचायत के पत्र के आदेश पर की थी, जिसे सूचना अधिकार में जनपत से ली गई जानकारी में नियुक्ति हेतु ऐसा कोई पत्र नही लिखने का बताया। साथ ही पेटलावद नगर में होने वाली किसी भी नियुक्ति के लिए जनपत पंचयात या जनपत अध्यक्ष का कोई अधिकार नही होता है।

बाबू अटकान की बहन व पती के बयान में भी विरोधाभास

जांच दल द्वारा सभी पक्षो के बयान दर्ज किए गए, बिंदु क्रमांक 5 में शारदा बाई अटकान ने भी अपने बयान में स्वीकार कीया कि, रामचंद अटकान उसका पति है और नियुक्ति के समय रामचंद अटकान भृत्य के पद पर कार्यरत थे, शारदा बाई अटकान ने अपने बयान में बताया कि, अंश कालीन स्थीपर से कलेक्टर दर पर नियुक्ति वर्ष 2010 में की गई, जाच के दौरान केवल सभी पक्षो के बयान लिए लेकिन उनके बयानों पर किसी प्रकार के सवाल जवाब नही किए गए।

जाच दल ने सभी के बयान के आधार पर दर्ज किए प्राचार्य के बयान, सभी बयानों के विपरीत दिया बयान

जांच दल ने एक-एक कर जाच के दायरे में आए बाबू के रिश्तेदारो के बयान दर्ज करने के बाद प्राचार्य शा.कन्या उमावि पेटलावद के प्राचार्य योगेंद्र प्रसाद के सभी बिंदु के आधार पर बयान दर्ज किए गए जो कि सभी के बयानों से विपरीत होकर सभी नियुक्ति से अपना और अपनी संस्था का पल्ला झाड़ लिया। वही मामले में जाच दल ने जो निष्कर्ष दिया वो और भी चौकाने वाला है।

अगले अंक में प्राचार्य प्रसाद के बयान पर जाच दल के निष्कर्ष के साथ फर्जी वेतन भुगतान मामले का बड़ा खुलासा...।

रतलाम में दो सिर एवं तीन हाथ वाले बच्चे का हुआ जन्म, लाखों में एक पैदा होते है ऐसे बच्चे

माही की गूंज, रतलाम।

शहर के मातृ एवं शिशु चिकित्सालय में एक महिला ने एक अनोखे प्रकार के बच्चे को जन्म दिया, जिसके दो सिर व तीन हाथ थे। बच्चे को देख सभी चौक गए, उसकी हालत गंभीर देखते हुए उसे गहन चिकित्सा इकाई में रखा गया था, लेकिन मंगलवार सुबह 5 बजे बच्चे ने दम तोड़ दिया। जानकारी के अनुसार, यह बच्चा शिवगढ़ के बाडलियाघाटा निवासी दुर्गा पत्नी गवजी को सोमवार दोपहर साढे 12 बजे हुआ था। एसएनसीयू प्रभारी डॉ. नावेद कुरैशी ने बताया कि, बच्चे का दिल, फेफड़े, गुर्दा सहित अन्य अंग एक है। दरअसल, एक भ्रूण से एक बच्चा बनता है, जबकि एक भ्रूण से एक अन्य भ्रूण अलग हो जाता है तो ट्विंस पैदा होते हैं। जब पूरी तरह भ्रूण अलग नहीं हो पाता तो कोज्जाइंट ट्विंस होते हैं। बच्चे का वजन 2.77 ग्राम है। दो से तीन साल पहले भी एक ऐसा मामला सामने आया था।

गोवा की पूर्व राज्यपाल मृदुला सिन्हा का निधन, पीएम मोदी व शाह ने जताया शोक

नई दिल्ली,एजेंसी। गोवा की पूर्व राज्यपाल मृदुला सिन्हा का बुधवार को 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह ने शोक व्यक्त किया है। मृदुला सिन्हा गोवा की पहली महिला राज्यपाल थीं। बिहार के मुजफ्फरपुर में जन्मीं सिन्हा विख्यात हिंदी लेखिका होने के साथ-साथ बीजेपी की वरिष्ठ नेत्री भी रही थीं।

गोवा की पूर्व राज्यपाल के निधन पर शोक जताते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया श्रीमती मृदुला सिन्हा जी को जनता की सेवा के लिए किए गए उनके प्रयासों के चलते याद किया जाएगा। वह एक कुशल लेखिका भी थीं, जिन्होंने साहित्य के साथ-साथ संस्कृति की दुनिया में भी व्यापक योगदान दिया। उनके निधन से दुखी हूं। उनके परिवार एवं प्रशंसकों के प्रति संवेदना।

उपचुनावों के बाद अब नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव की तैयारी

राजनीतिक दलों ने कसी कमर

मतदाता जागरूकता अभियान

भाजपा चुनाव के लिए हमेशा तैयार

ये है लक्ष्य

मांधाता के मतदाताओं से कहा- जिसे वोट दिया, विकास उससे कराओ

पीसीसी ने विजयलक्ष्मी साधौ को माफी मांगने की दी नसीहत

मास्टर ट्रेनर्स किए जाएंगे तैयार

मिशन-23 की तैयारी के पहले भाजपा में संस्कारों की कार्यशाला

शिविर में यह सीखेंगे कार्यकर्ता

सिंधिया कल आएंगे भोपाल

पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ छोड़ेंगे प्रदेशाध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष में से कोई एक पद?

सिंधिया समर्थक दो मंत्रियों के इस्तीफा न देने पर प्रभात झा ने दी यह सफाई

जम्मू-कश्मीर में पंचायत चुनाव

आतंकी डर से प्रत्याशी वापस ले रहे हैं नाम, 12168 पंचों और 1089 सरपंच पदों पर इलेक्शन

नीतीश के मंत्रिमंडल में झलक रहा है बीजेपी का असली बिहार प्लान

नीतीश सरकार में मेवालाल चौधरी को शिक्षा मंत्री, विपक्ष ने बोला हमला

बिहार में बीजेपी के भविष्य की रणनीति

मोदी ने अमेरिका के निर्वाचित राष्ट्रपति बाइडन से बात की

शिव भक्तों ने किया मनसा महादेव व्रत का उद्यापन, मंदिरों में रही भीड़

माही की गूंज, सारंगी। ओंकारेश्वर महादेव मंदिर पर मनसा महादेव व्रत उद्यापन करने वाले भक्तों की भीड़ शिव मंदिर पर रही ब्रह्म मुहूर्त में सुबह 4 बजे से ही भक्तों का मंदिर पर आना शुरू हो गया था, मंदिर समिति द्वारा कोरोना संक्रमण को देखते हुए भक्तों के लिए सेनेटाइजर की व्यवस्था की गई थी, भक्तों ने भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए पूजन पाठ किया। मनसा महादेव व्रत सावन महीने की चतुर्दशी से शुरू होता है 4 माह तक भक्त प्रति सोमवार पूजन करते हैं, तथा कार्तिक माह की चतुर्दशी पर उद्यापन किया जाता है। शिव भक्तों ने बताया इस व्रत को करने से भगवान शिव भक्तों की सभी मनोकामना पूर्ण करते हैं, नगर में गरीब 400 भक्त इस व्रत को करते हैं, यह व्रत लगातार 4 वर्षों तक करना पड़ता है।

पंडित राजू गिरी गोस्वामी ने बताया, सुबह से ही भक्तों ने ब्रह्म मुहूर्त में पूजन किया जो दोपहर तक चलता रहा उसके बाद भगवान को लड्डुओं का भोग लगाया गया हर भक्त इस व्रत को करने के बाद काफी प्रसन्न चित नजर आए।

सांवलिया सेठ मंदिर पर चढ़ाई ध्वजा

माही की गूंज, थांदला। स्थानीय थांदला में गवली सामज एवं नवयुवक मण्डल द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दीपावली के दूसरे दिन पड़वा पर गवली सामज के सांवलिया सेठ मंदिर पर ध्वजा चढ़ाई। जिसके बाद महाआरती हुई। ध्वजा चढाने और महाआरती का लाभ गवली समाज के सदस्य पप्पु डोंगा को मिला।

अधिकारियों एवं ठेकेदार की मिलीभगत से जोबट-खट्टाली-नानपुर सड़क निर्माण में घटिया सामग्रियों का हो रहा उपयोग

एक अदना सा टाईम किपर दे रहा है प्रशासन को चुनौती

माही की गूंज, अलीराजपुर।

आदिवासी बाहुल्य जिले मे केन्द्र एवं राज्य सरकार की महत्वपुर्ण योजनाओ का लाभ मिलना अब दुर की कोडी नजर आने लगा है। जिले मे हर कोई भ्रष्टाचार रुपी गंगा मे डुबकी लगाना चाहता है। जिम्मेदार अधिकारी ओर कतिपय ठेकेदार की आपसी मिलीभगत से कार्य मे भारी भ्रष्टाचार का खेलकर शासन की जनहितेषी योजनाओं पर पानी फेरते हुए प्रदेश सरकार की छवि को धुमिल करने का प्रयास किया जा रहा है, वही सरकार इन भ्रष्टाचारीयों पर अभी तक शिवराज सरकार अंकुश लगाने में विफ्ल रही है पर अब देखना है कि चोथी बार उपचुनाव में 19 सीट जीत कर बहुमत हासिल करने वाली शिवराज सरकार अपने प्रशासनिक नुमांईदो व भ्रष्टचारीयो पर अब भी अंकुश लगा पाती है या नही ये तो आने वाला समय ही बता सकता है। फ्लिहाल इन दिनो जिले के जोबट-खट्टाली-नानपुर सडक निर्माण कार्य मे अधिकारियो एवं ठेकेदार की साठ-गांठ से नियमो को ताख पर रखकर भारी भ्रष्टाचार किया जा रहा है। संबधित ठेकेदार एवं उसका एक अदना सा मेट (टाईम किपर) फ्रिोज खान शासन-प्रशासन को चुनोती देते हुए खुलेआम निर्माण कार्यो मे घटिया एवं अमानक स्तर की सामग्रीयो का उपयोग कर रहे है, जिसके चलते उक्त सडक एक ही बारिश मे धुल जाने की पुरी आशंका है, भ्रष्टाचार का खुलासा देखते ही हो रहा है पर उक्त भ्रष्टाचार की भेट चढ रहे मार्ग कि जांच उच्चस्तरीय की जाए तो पुरा दुध का दुध और पानी का पानी सामने आ जाएगा।

पुलिया निर्माण कार्य मे डाले जा रहे है लिकेज पाईप

उल्लेखनिय है कि, उक्त सडक निर्माण कार्य का विगत फरवरी मे कमलनाथ सरकार के तात्कालिन मंत्री सुरेंद्रसिंह हनी बघेल ने जोबट विधायक सुश्री कलावती भूरिया एवं अलीराजपुर विधायक मुकेश पटेल की मोजुदगी मे भुमिपुजन कर कार्य का शुभारंभ किया था। जोबट-खट्टाली-नानपुर तक सडक मार्ग 22 किलोमीटर की लागत करीब 67 करोड रुपए है, सडक निर्माण कार्य इन दिनो प्रगति पर है और निर्माण कार्य मे अनियमितताएं व लापरवाही बरतकर घटिया स्तर का निर्माण किया जा रहा है। गुणवत्ता विहीन और घटिया निर्माण कार्य का नजारा ओर शासन के रुपयों की बंदरबाट किस प्रकार की जा रही है, यहां पर आसानी से देखने को मिल जाएंगा।

उक्त सडक निर्माण कार्य मे गिट्टी ओर बडे बोल्डर की जगह निम्न एवं घटिया स्तर के मटरियल का उपयोग कर सडक पर बिछा कर सड़क का बेस तेयार किया जा रहा है। वही उक्त मार्ग मे लगभग पचास पुलिया का निर्माण होना है, पुलिया निर्माण मे मात्र 6-8 इंची के सरिए का उपयोग किया जा रहा है। पुल-पुलिया निर्माण मे बिना सरिए की जाली बिछाकर फाउंडेशन भरा जा रहा है। इतना ही नही ठेकेदार द्वारा पुलिया निर्माण कार्य मे टूटे-फूटे हुए लिकेज पाईप डाले जा रहे है, जो वर्षाकाल के दौरान व लोडिंग वाहनो के आवागमन से कभी भी पुलिया ढह सकती है की आंशका जताई जा रही है। वही पुलिया निर्माण मे जमीन पर बनने वाले फाउंडेशन मे सीमेंट की मात्राओ का बहुत कम उपयोग किया जा रहा है। निर्माण मे सीमेंट की जगह पर गिट्टी ओर धुल ज्यादा नजर आ रही है, मगर अफ्सोस कि उक्त सड़क निर्माण से लोगो को सुविधा मिलने की बजाए असुविधा होकर निर्माण कार्य मे भ्रष्टाचार की भेट चढ उक्त कार्य जानलेवा भी बन सकता है। जारी निर्माण कार्य से ऐसा लगता हे कि, उक्त सडक साल भर भी नही टिक पाएगी। ज्ञात रहे कि सडक निर्माण कार्य को लेकर विगत माह ग्राम वासियो ने सडक निर्माण की गुणवंता को लेकर गंभीर सवाल उठाए थे, साथ ही ग्रामिणो ने क्षैत्रिय विधायक सुश्री भूरिया एवं जिला प्रशासन से इसकी शिकायत भी की थी।

जोबट-खट्टाली-नानपुर सडक निर्माण कार्य मे चल रही अनियमित्ताओ को लेकर संबधित अधिकारी से दुरभाष पर चर्चा करना चाही, परंतु उन्होने मोबाईल रिसीव नही किया। बहरहाल उक्त निर्माण कार्य शासन-प्रशासन के तय मापदंड के अनुसार नही किया जा रहा है, जो एक बडी जांच का विषय है।

रात्रि में मनाई गई भगवान बिरसा मुंडा की जयंती

माही की गूंज, खच्चरटोड़ी।

खच्चरटोडी के ग्राम खालसा में रविवार को धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती जनजाति गौरव दिवस के रुप मे मनाई गई। बाबा देव की विशेष पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम में जनजाति भजन का भी आयोजन रखा था। कई सालों के बाद पहली बार गांव के सभी लोग एक साथ बाबा देव के पुजा स्थल पर उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम के पहले यहा पुजा स्थल के आस-पास की साफ-सफाई कर के महिलाओं ने मिट्टी ओर गोबर से लिपाई की, काफी संख्या में महिलाएं भी उपस्थित रही। खीर की प्रसादी का वितरण किया गया। कार्यक्रम में आरएसएस के प्रचारक अवधेश भाई ने लोगों को बिरसा मुंडा के गौरवमय इतिहास के बारे में बताया। पलवाड एरिये में हिन्दू धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार करने वाले बबला जी महाराज ने धार्मिक उद्घोधन देकर समाज को संगठित होने और अपने खजीज देवता की पूजा हमेशा करने को कहा। जनजाति परम्परा के बारे में वनवासी सशक्तिकरण केन्द्र बडा घोसलिया के प्रमुख रामसिंह निनामा ने अपनी बात रखी, कलसिंग कटारा निवासी नया गांव खालसा ने भी जनजाति परम्परा के सम्बन्ध में बताया।

दिलीपसिंह भूरिया की प्रतिमा स्थल पर हो रहे अतिक्रमण को लेकर कलेक्टर को सौपा ज्ञापन

माही की गूंज, झाबुआ।

आदिवासी हितरक्षक समिति झाबुआ द्वारा बुधवार को स्वर्गीय श्री दिलीपसिंह भूरिया की मेघनगर नाका स्थित प्रतिमा के इर्द-गिर्द किए जा रहे अतिक्रमण को हटाने एवं बाउण्ड्रीवाल बनाने के साथ ही नियमित साफसफाई कराने को लेकर कलेक्टर को ज्ञापन सोप गया। ज्ञापन के अनुसार झाबुआ जिले के छोटे से ग्राम माछलिया मे जन्म लेकर देश की राष्ट्रीय राजनीति मे अपने पराक्रम से आदिवासी समाज की दशा एवं दिशा सुधारने मे अहम भूमिका स्व. श्री भूरिया ने अदा की है और इसी कारण उनके सम्मान मे अवसान के पश्चात उनकी आदमकद प्रतिमा जिला मुख्यालय झाबुआ के मेघनगर नाके पर स्थापित की गई है। इस प्रतिमा स्थल को विकसित करने के लिए प्रतिमा अनावरण के समय तत्कालीन नगरीय प्रशासन मंत्री लालसिंह आर्य ने एक करोड रुपए देने की घोषणा की थी, किन्तु आचार संहिता लगने से स्थानीय प्रशासन द्वारा इस संबध मे ठोस कार्रवाई नही की गई और विकास का कार्य आज तक नही हुआ है।

ज्ञापन में बताया कि, दिलीपसिंह भूरिया आदिवासी समाज के सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता रहे है। उनके द्वारा अपने संसदीय कार्यकाल मे आदिवासीयो के हित संरक्षण के लिए कानून बनवाए, जिससे आदिवासियो को सीधे लाभ मिला है। सहकारिता के माध्यम से आदिवासियो को शोषण से मुक्ति दिलवाई तो ऐसा कानून बनाकर सत्ता मे सीधे-सीधे आदिवासियो की भागीदारी और उनके अधिकार संरक्षित किए गए। उन्होने झाबुआ-रतलाम संसदीय क्षैत्र के विकास के लिए उनके द्वारा ठोस कार्ययोजना बनाकर विभिन्न विकास और रोजगार मुलक कार्य प्रारम्भ करवाए गए, झाबुआ जिला उस समय सूखे के दंश से ग्रस्त था तब माही सिंचाई परियोजना का निर्माण करवाया गया, काम के बदले अनाज योजना, घर-घर विद्युत कनेक्शन देना हो या गांव-गांव तक शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए, नए स्कूल खोलने व भवन सहित अन्य संसाधन निर्मित कराए गए थे। सडको का विस्तार करवाया गया तो झाबुआ-दाहोद रेलवे लाईन की स्वीकृति, मेघनगर मे सुपर फास्ट ट्रेनो का स्टापेज सहित जिले मे अनेक विकास के कार्य कराने वाले श्री दिलीपसिंह भूरिया के अनुयायी देश भर से झाबुआ आकर उनकी प्रतिमा के दर्शन कर माल्यार्पण करते है।

परन्तु अत्यंत दुःख होता है कि, आदिवासी समाज एवं जिले के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले स्व. श्री भूरिया की प्रतिमा तो हमने स्थापित कर दी किन्तु उसकी देखरेख के अभाव मे प्रतिमा स्थल की दुर्दशा हो रही है, चारो ओर की बाउण्ड्रीवाल को तोडकर अतिक्रमण किया जा रहा है, गंदगी की भरभार है। वही वाहनो के धुए से प्रतीमा पर धूल जम रही है जिसे देखकर हम सभी का मन अपार वेदना से व्यथित हो जाता है।

ज्ञापन के माध्यम से माग की गई है कि, स्वर्गीय श्री दिलीपसिंह भूरिया की प्रतिमा की नियमित साफ-सफाई की जाने और प्रतिमा स्थल पर किए गए अतिक्रमण को तुरन्त हटाकर बाउण्ड्रीवाल का निर्माण किया जावे, तथा इस सम्पूर्ण परिसर मे श्री दिलीपसिंह भूरिया के नाम पर गार्डन विकसित करने की कार्ययोजना बनाकर स्थल को विकसित कराने की मांग की। ज्ञापन आदिवासी हितरक्षक समिति के कैलाश भूरिया, अल्केश मैडा, रमेश भाबोर, सुरभान गुण्डिया, मांगीलाल भूरिया, जोगावर डामोर एव कानजी भूरिया ने सौपा।

यूरिया की अभी से बता रहे किल्लत पर दुकानों पर महंगे भाव में मिला रहा खाद

एक हजार मीट्रिक टन डिमांड, लेकिन आ रहा मात्र 400 मीट्रिक टन खाद

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

यूरिया के लिए अभी से मारामारी शुरू हो गई है। कई जगह तो किसानों ने महंगे दामों पर ही यूरिया की खरीदी कर ली है ताकि आने वाले समय में रबी की फ्सल हेतु परेशानी न आए। वहीं विकासखंड की सोसायटियों पर यूरिया तो पहुंचाया जा रहा, लेकिन जितनी आवश्यकता है उतनी मात्रा में नही पहुंच पा रहा, इस वजह से किसान हो रहे परेशान।

गौरतलब है कि, इस समय किसानों को यूरिया की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। इस समय रबी की फ्सलों की सिंचाई का कार्य चल रहा है। इस कार्य में डीएपी व यूरिया खाद की आवश्यकता है, लेकिन खाद समितियों में मिल नहीं रहा है। इस कारण किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। तहसील की सहकारी समितियों में खाद नहीं होने के कारण किसान बाजारों से खाद खरीदने को मजबूर है, लेकिन वहां भी खाद की किल्लत को देखते हुए कालाबाजारी बढ़ गई है। एक कट्टे पर ही सौ से डेढ सौ रुपए तक अधिक वसूले जा रहे हैं।

आगामी दिनों में बढ़ने वाली है परेशानी

आगामी कुछ दिनों में खाद की आवश्यकता और बढ़ने वाली है, जिससे कालाबाजारी तेज होने की आशंका है। किसान सहकारी समिति में लोन पर सरकारी दर पर खाद लेते हैं, समितियों में खाद नहीं होने से उन्हें बाजार में नकद व अधिक दाम देने पड़ रहे है। जिससे किसानों पर अधिक आर्थिक भार पड़ रहा है।

बता दे कि, पेटलावद विकासखण्ड के लिए एक हजार मीट्रिक टन यूरिया खाद चाहिए जबकि अभी 400 मीट्रिक टन ही जिले से भेजा जा रहा है। सहकारी संस्था से जुड़े अधिकारीयो का कहना है कि पूरे पेटलावद क्षेत्र की डिमांड 800 से 1 हजार मीट्रिक टन है। हालांकि अभी माही नहर शुरू नही हुई है, जिससे किसान खाद लेने सोसायटीयो पर नही पहुंच रहे है, जैसे ही नहरे शुरू होगी वैसे ही सहकारी संस्थाओं में किसानों की भीड़ बढ़ना तय है।

एसडीएम के साथ दल ने संस्थाओ के साथ कालाबाजारी करने वाले खाद डिलरो की दुकान का भी किया निरीक्षण।

266.50 रुपए की बोरी 400 रूपए से ऊपर तक बेचते है व्यापारी

समय से यदि यूरिया खाद किसानों को नहीं मिला तो काफी नुकसान होगा, इस नुकसान से बचने के लिए कई किसानों ने 266.50 रुपए की बोरी सामन्यतः व्यापारियो से 320 में खरीदते है वही जहा खाद की किल्लत होने पर वही खाद की बोरी खाद के डिलर व उपडिलर 400 रुपए व उससे अधिक दाम में किसानो को बेचते है और किसानो को संस्थाओ में खाद नही होने के कारण मजबुरी में महंगे भाव में डिलरो से खाद खरीदना मजबुरी बन जाती है। पिछले वर्ष भी खाद की कमी के कारण किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ा था। इस बार सरकार ने सहकारी समितियों में खाद की पर्याप्त मात्रा देने की बात कही थी, लेकिन अभी से खाद की कमी होने लगी है।

कालाबाजारी पर अंकुश नहीं तो किसानों को होगा आर्थिक नुकसान

रबी की फसल की बुआई के लिए किसान जुटे हुए है। वहीं किसानों की फ्सलों के लिए उचित मात्रा में उर्वरक की भी आवश्यकता होती है। जिसको देखते हुए समय पर किसानों को खाद उपलब्ध भी होना चाहिए, लेकिन कई सहकारी समितियों में यूरिया खाद वर्तमान में उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। ऐसे में किसानों में अभी से ही खाद के लिए असमंजस फैला हुआ है। ऐसे में यूरिया की बडे पेमाने पर कालाबाजारी से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

पावती और संबंधित सोसाइटी से ही खाद लेने का दबाव

बाजार में यूरिया ऊंचे दाम पर मिल रहा वही सोसाइटीयो के माध्यम से मिलने वाले यूरिया की पूर्ति भी सोसाइटी नही कर पा रही है, सरकार के नियम के अनुसार प्रति हेक्टयर भूमि पर 300 किलो लगभग 6 बोरी यूरिया किसान तक पहुचना है, लेकिन खाद की कमी के कारण किसानों की पूर्ति, जरुरत के हिसाब से नही हो रही है, सोसाइटीयो में खाद के लिए किसान को पावती लाना अनिवार्य किया गया है, लेकिन ज्यादतर किसानो की पावती क्राफ्लोन के कारण बैक में रखी हुई है, जिससे किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वही किसानों पर संबधित सोसाइटी से ही खाद लेने के लिए कहा जा रहा है, जिससे कई किसानों को नजदीक की सोसाइटी छोड़कर दूर जाना पड़ रहा है।

कई सोसायटी पर खाद नही मिलने से किसान परेशान हो रहे है, इस संबंध में पेटलावद क्षेत्र के मैनेजर ओझा साहब से चर्चा की तो उनका कहना है, पावती का नियम शासन का है उसके अनुसार खाद का वितरण किया जा रहा है।

एसडीएम ने किया खाद दुकानो का निरीक्षण

मंगलवार को पेटलावद एसडीएम शिशिर गेमावत के द्वारा नगर सहित क्षेत्र की खाद्य दुकानों का निरीक्षण किया, इस दौरान उन्होंने खाद की गुणवत्ता के बारे में जानकारीया ली। साथ ही नगर की कई दुकानों पर उन्होंने पहुंचकर निरीक्षण किया। एसडीएम गेमावत के द्वारा ग्राम मोहनकोट में भी शासकीय दुकान पर खाद को लेकर व्यवस्थाएं देखी, खाद की किल्लत की जानकारीया सामने आ रही है जिसके चलते प्रशासन खाद की कालाबाज़ारी और अव्यवस्था सुधारने के लिए लगा हुआ है। सोसाइटियों में किसानों के लिए आने वाला यूरिया कई बार कालाबाज़ारी की भेंट चढ़ जाता है जिसके चलते कृतिम कमी हो जाती है जिसका लाभ बाजार में व्यापारी ऊंचे दाम पर खाद बेच कर उठाते है।

माहेश्वरी समाज की बैठक संपन्न

- कोविड के प्रकोप के चलते अन्नकूट महोत्सव का आयोजन किया निरस्त

माही की गूंज, झाबुआ। माहेश्वरी समाज झाबुआ की महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। जिसमें समाजजनों ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया है कि कोरोना महामारी के प्रकोप के चलते इस वर्ष लाभ पंचमी पर समाज के श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर में भगवान की आरती कर जो समाजजन अपने घरों से प्रसादी बनाकर वितरण करना चाहते है, वह वितरित कर सकते है।

समाज अध्यक्ष दीपक बांगड़ ने बताया कि कोरोना वायरस संक्रमण के बढ़ते प्रकोप को दृष्टिगत रखते हुए माहेश्वरी समाज द्वारा प्रतिवर्ष दीपावली के बाद लाभ पंचमी को किए जाने वाले अन्नकूट महोत्सव को इस बार निरस्त किया गया है। समाज हित और शहर हित को देखते हुए माहेश्वरी समाज की बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि गुरुवार को प्रतीकात्मक रूप से शाम 7 बजे श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर मे भगवान का श्रृंगार कर आरती की जाएगी। जो समाजजन अपने घरों से प्रसादी तैयार कर लाना चाहते है, वह आरती के बाद वितरण कर सकते है। बैठक में समाज के वरिष्ठ भरत माहेश्वरी, प्रमोद सोनी, ललित माहेश्वरी, रुचिन, विजय, हरिश तथा कमलेश माहेश्वरी आदि उपस्थित थे।

संपादकीय

कश्मीर में गठबंधन कर चुनाव लड़ रहा विपक्ष

जम्मू-कश्मीर से एक अच्छी और मुख्यधारा वाली खबर आई है। नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी, पीपुल्स कॉन्फ्रेंस, सीपीएम और अन्य क्षेत्रीय दलों ने कश्मीर में जिला परिषद के चुनाव लड़ना तय किया है। वे एक गठबंधन के तौर पर चुनाव में उतरेंगे। यह अप्रत्याशित गठबंधन है, जो 2019 में अनुच्छेद 370 और 35-ए समाप्त करने के बाद उभरा है। उसे 'गुपकर घोषणा' का नाम दिया गया है। गठबंधन के सभी दल केंद्र सरकार और संसद के फैसले का विरोध कर रहे हैं। इनमें से कई नेताओं को हिरासत में रखा गया, क्योंकि हालात बिगड़ने और अराजक होने की लगातार आशंकाएं बनी थीं। पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती को बीते दिनों ही रिहा किया गया है। रिहाई के बाद इन सभी दलों और नेताओं का रुख भारत-विरोधी रहा है। उन्हें भारतीय गणतंत्र और तिरंगे में कोई विश्वास या आस्था नहीं है। हालांकि डॉ. फारूक अब्दुल्ला अब भी लोकसभा सांसद हैं। बहरहाल विपक्ष के इन सभी दलों और नेताओं ने चीखने के अंदाज में अनुच्छेद 370 और 35-ए की बहाली की लड़ाई के ऐलान किए थे। भारतीय व्यवस्था में चुनाव लड़ने का अचानक फैसला चौंकाता है, क्योंकि दो पूर्व मुख्यमंत्रियों-उमर अब्दुल्ला और महबूबा-ने अनुच्छेद 370 के बिना चुनाव न लड़ने की घोषणा की थी।

बीते दिन ही महबूबा ने अलगाववाद की जुबां में बयान दिया था कि कश्मीर में आतंकवाद घटा नहीं, बढ़ रहा है। नौजवानों के हाथ में नौकरी या रोजगार नहीं है, तो वे बंदूक के अलावा और क्या थामेंगे? कश्मीर में आतंकियों के गुटों में भर्तियां बढ़ गई हैं। सवाल है कि क्या महबूबा अलगाववादी एजेंडे के साथ ही चुनाव में उतरेंगी? यह राजनीति तो देशविरोधी होगी। बहरहाल चुनाव महबूबा और उनकी पार्टी पीडीपी का ही नहीं है। अब तमाम परस्पर-विरोधी दल एक गठबंधन में हैं, क्योंकि राजनीतिक लड़ाई बड़ी और अहं है। जम्मू-कश्मीर जब से केंद्रशासित क्षेत्र बना है, उसमें यह पहला स्थानीय चुनाव होगा। यकीनन प्रशासनिक पहल बेहद लोकतांत्रिक है। इस गठबंधन के सभी नेता मुख्यधारा में शिरकत करते रहे हैं और भारत सरकार का हिस्सा भी रहे हैं। कश्मीर के परिदृश्य और समीकरण 2014 के बाद बदलने शुरू हुए थे, जब नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने और भाजपा को प्रचंड बहुमत मिला।

तब डाक्टर अब्दुल्ला-उमर की नेशनल कॉन्फ्रेंस और महबूबा की पीडीपी ने कश्मीर में एक वैकल्पिक गठबंधन तैयार करने पर विमर्श किया था, लेकिन उसे अंजाम तक नहीं पहुंचाया जा सका, क्योंकि मुफ्ती मुहम्मद सईद के इंतकाल के बाद महबूबा ने भाजपा के साथ गठबंधन बनाकर सरकार बना ली और खुद मुख्यमंत्री बन गईं। बहरहाल अनुच्छेद 370 और 35-ए को समाप्त करने के एक साल बाद कश्मीर के तमाम विपक्षी दलों ने, एक गठबंधन के तौर पर, भाजपा के खिलाफ लड़ाई लड़ने की सोची है। यानी भारतीय संविधान के मुताबिक मुख्यधारा की सियासत में शिरकत करने और चुनाव लड़ने को स्वीकृति दी है। क्या यह लड़ाई 370 की वापसी तक पहुंच सकती है? हमें ऐसा नहीं लगता, लेकिन उनके मंसूबे साफ हैं। वे अनुच्छेद 370 और 35-ए के मुद्दे पर 'कुर्बान' होने की मुद्रा में हैं। वे कश्मीरी लोगों को दिखाना चाहते हैं कि कश्मीरियत के साथ धोखा किया गया है, उनकी बुनियादी पहचान और हुकूक छीने गए हैं, लिहाजा उनके लिए लड़ना, संघर्ष करना जरूरी है। विपक्षी इसे आजादी की नई लड़ाई के तौर पर चित्रित कर रहे हैं, लिहाजा आने वाले दिनों में मुस्लिम-बहुल कश्मीर घाटी का परिदृश्य बदला-बदला सा लग सकता है।

नीतीश कुमार होने के मायने

वर्तमान राजनीतिक भारत में संभवतः नीतीश कुमार अकेले ऐसे नेता हैं, जो पिछले ढाई दशक से लगातार सत्ता के साथ जुड़े हुए हैं। पिछले 15 साल से लगातार बिहार सरकार के मुखिया तो हैं ही, उसके पहले अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में गठित केंद्र की राजग सरकार में भी मंत्री रहे हैं। यानी 1997 से लेकर आजतक सत्ता की देवी का आशीर्वाद अनवरत उन्हें मिल रहा है।

बड़ी बात सिर्फ यह नहीं कि उनके नतृत्व के लोग हामी रहे हैं। बड़ी बात यह भी है कि उस पार्टी के मुखिया के रूप में उन्होंने अपना सिक्का जमाए रखा, जिस पार्टी का वजूद बिहार के बाहर कभी मजबूती से महसूस भी नहीं किया गया। इतनी बड़ी कामयाबी केवल भाग्य या जोड़तोड़ से नहीं मिल सकती। इस कामयाबी के लिए नीतीश बाबू का व्यक्तित्व और उनकी निर्णय क्षमता का भी बहुत बड़ा योगदान है। नीतीश कुमार निर्णय में जितने कठोर हैं, व्यवहार में उतने ही समावेशी। जब उनपर चुनाव के दौरान अहंकारी होने का आरोप लगा तो उन्होंने हाथ जोड़कर पत्रकारों से कहा- कृपया मुझे अभिमानी मत कहिए।

सुशासन बाबू का टैग उन्हें यूं ही नहीं मिला। उसके लिए नीतीश कुमार ने भाव और प्रभाव रहित राजनीति और लोकनीति पर चलते हुए अपना बहुत कुछ दांव पर भी लगाया है। नीतीश कुमार को इससे फर्क नहीं पड़ता कि उनकी पार्टी अब भाजपा के सामने छोटे भाई की भूमिका में आ गई है। वे आज भी उतने ही विश्वास और ठसक के साथ सरकार बनाते दिखे जैसे पिछले चुनाव में राजद को ज्यादा सीटें मिलने के बाद भी मुख्यमंत्री बनते समय दिखे थे। वैसे भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत तमाम भाजपा के शीर्ष नेताओं द्वारा बारंबार इस निश्चय की घोषणा कि नीतीश कुमार ही अगले 5 वर्ष के लिए बिहार के मुख्यमंत्री रहेंगे, तो फिर किसी के मन में कोई शंका या संदेह आने की गुंजाइश भी नहीं रहती।

नीतीश कुमार ने अपने राजनीतिक जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। इतिहास गवाह है कि 1995 में 324 सीट वाले बिहार विधानसभा में जनता दल यूनाइटेड को केवल 7 सीटें मिली थीं। उसके बाद नीतीश कुमार ने किस तरह बिहार की राजनीति में अपने आपको अपरिहार्य बना दिया, यह अब सबके सामने है।

1 मार्च 1951 को बिहार के बख्तियारपुर में एक साधारण परिवार में जन्में नीतीश कुमार ने अपनी सूझबूझ और जन स्वीकारोक्ति के बल पर एक अपने को असाधारण राजनेता सिद्ध कर दिया है।

इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग से सोशल इंजीनियरिंग तक का नीतीश कुमार का सफर कई मोड़ों से होकर गुजरा है। 1974 से लेकर 1977 तक चले जेपी आंदोलन में तपने और जनता के लिए लड़ने के लिए तैयार होने का समय था। नीतीश कुछ उन नये राजनेताओं में सम्मिलित थे जिन्हें जयप्रकाश बाबू के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन में सक्रिय भूमिका मिली थी।

नीतीश की सफल चुनावी राजनीति 1985 में शुरू हुई, जब वे पहली बार बिहार विधानसभा के लिए चुने गये। पहले लोकदल और फिर जनता दल में भी उन्हें महत्वपूर्ण पद दिए गए। लेकिन जनता दल में आपसी मनमुटाव के चलने नीतीश ने जार्ज फर्नांडीस के साथ मिलकर समता पार्टी का गठन कर लिया और अपनी एक अलग राजनीतिक पहचान कायम कर ली। जार्ज फर्नांडीस कांग्रेस के खिलाफ राजनीतिक गठबंधन में भाजपा के साथ आए और इस तरह से नीतीश कुमार का भी भाजपा के साथ एक औपचारिक संबंध स्थापित हो गया। राजनीति में नीतीश कुमार का कद बढ़ता गया वे जल्दी ही नौंवी लोकसभा के सदस्य भी चुन लिए गए। 1990 में उन्हें पहली बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में बतौर कृषि राज्यमंत्री बनाया गया। वे लगातार कई वर्षों तक बिहार के बाढ़ संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते रहे। वाजपेयी सरकार में जार्ज फर्नांडीस के साथ साथ नीतीश कुमार भी कैबिनेट मंत्री बने। वहां उन्होंने रेल और भूतल परिवहन मंत्री की जिम्मेदारी संभाली।

नीतीश कुमार की रूचि और दखल बिहार की राजनीति में ज्यादा थी। जनता लालू यादव और उनकी परिवार के सरकार से तंग आ चुकी थी। प्रदेश के एक बदलाव का बयार चल रहा था। वैसे में नीतीश कुमार जनता की आकांक्षा बन कर उभरे और 2005 में बनने वाली नई सरकार का नेतृत्व संभाला। तब से वह लगातार मुख्यमंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। हालांकि वह पहली बार वर्ष 2000 में ही मुख्यमंत्री बन गए थे लेकिन उन्हें सिर्फ सात दिनों में ही त्यागपत्र देना पड़ गया। नीतीश भले ही सत्ता में पिछले ढाई दशक से बने हुए हैं, लेकिन जब भी नैतिकता की बात आई तो उन्होंने इस्तीफा देने में जरा भी संकोच नहीं किया। 2014 के आम चुनाव में जब उनकी पार्टी लोकसभा में कोई बड़ी जीत हासिल नहीं कर पाई तो नीतीश कुमार ने स्वयं खराब प्रदर्शन की जिम्मेदारी लेते हुए मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था और अपनी जगह दलित वर्ग के नेता जीतनराम मांझी को मुख्यमंत्री का पद सौंप दिया था। लेकिन पार्टी और सरकार में उथल-पुथल के बाद उन्हें फरवरी 2015 में फिर से नेतृत्व के लिए आगे आना पड़ा। इसी साल विधानसभा चुनाव हुए और नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय जनता दल से गठबंधन कर चुनाव लड़ा और फिर बहुमत पाकर मुख्यमंत्री बने। लेकिन जब लालू यादव और उनके बेटे तेजस्वी मनमानी करते नजर आए तो नीतीश ने तुरंत उनके दूरी बनाने का फैसला किया और फिर से भाजपा के साथ सरकार का गठन कर लिया।

बिक्रम उपाध्याय

नीतीश कुमार यदि बिहार की राजनीति में अजातशत्रु बने हुए हैं तो उसके पीछे एनडीए सरकार का काम और उनका स्पष्ट दृष्टिकोण का भी योगदान है। नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार अब बीमारू राज्य से बाहर आ चुका है। गरीबी दर लगातार घट रही है। 2004-05 में जहां गरीबी दर 54.4 प्रतिशत थी, वही अब घटकर 33.74 प्रतिशत हो गई है। बिहार में प्रति व्यक्ति आय और व्यय दोनों बढ़ी है। इज ऑफ डूइंग बिजनेस में भी बिहार 2015 में बिहार का स्कोर 2015 में 16.4 से बढ़कर वर्तमान में 81.91 हो गया है।

नीतीश कुमार जानते हैं कि आगे चुनौतियां बड़ी हैं। केवल राजनीतिक फ्रंट पर ही नहीं, सरकार के प्रदर्शन में भी। अपने कामकाज के भरोसे राजनीति करने वाले नीतीश आगे भी उसी पर निर्भर रहने वाले हैं। बिहार के विकास की जिम्मेदारी तो है ही साथ ही सामाजिक सामंजस्य और विरोधियों की कसौटी पर भी उन्हें खड़ा होना है। शराबबंदी का उनका फैसला महिलाओं ने सराहा और उसका परिणाम वोट में भी मिला। लेकिन नशा मुक्ति के साथ साथ रोजगार और औद्योगिकीकरण भी बड़े मुद्दे हैं। जिस पर नीतीश कुमार को कुछ बड़ा करके दिखाना है। बिहार की जनता नीतीश कुमार के साथ है, परिस्थितियां भी अनुकूल है। आगे का रास्ता नीतीश कुमार को तय करना है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

विचारधारा बड़ी या राष्ट्रभक्ति

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण करते हुए प्रधानमंत्री ने एक बड़ा बुनियादी सवाल खड़ा किया। सवाल यह है कि कौन बड़ा है- राष्ट्रहित या विचारधारा? यह सवाल उन्होंने कोई बौद्धिक बहस चलाने के लिए नहीं उठाया है। मोदी ने इसे इसलिए उठाया है कि ज.ने.वि. (जेएनयू) को वामपंथ का गढ़ माना जाता है। ये बात दूसरी है कि ज.ने.वि. में सबसे पहले पीएच.डी. करनेवालों में मेरा नाम भी है। मेरा हिंदी-आग्रह, धोती-कुर्ता और लंबी चोटी देखकर मुझे भी लोग दक्षिणपंथी ही समझते थे। उसके प्रथम दीक्षांत समारोह में, जब मुझे उपाधि मिली थी, तब भी वहां विवाद उठ खड़ा हुआ था और आजकल तो वहां वामपंथियों और दक्षिणपंथियों में दंगल होता ही रहता है। मोदी ने इसी दंगल को दरकिनार करने के लिए विचारधारा को राष्ट्रहित के मातहत बताया है।

मोदी का कहना है कि जब भी कोई राष्ट्रीय संकट खड़ा होता है, भारतीय लोग इतने अच्छे हैं कि वे विचारधारा को किनारे रखकर राष्ट्रहित के पक्ष में उठ खड़े होते हैं। यह बात बिल्कुल ठीक है लेकिन जो लोग राष्ट्र से भी बड़ा विश्व को मानते हैं और विश्व के समस्त सर्वहारा लोगों के लिए लड़ रहे हैं, वे राष्ट्र के नाम पर किसी धर्म या संप्रदाय या जाति की संकीर्ण राजनीति का विरोध करते हैं तो वे पूछते हैं कि इसमें गलत क्या है? उनका दावा तो यह होता है कि वे ही सच्चे राष्ट्रहित का संपादन कर रहे हैं। यहां दिक्कत पैदा तभी होती थी, जब हमारे वापमंथी बुद्धिजीवी और कम्युनिस्ट पार्टियां रूस भक्ति और चीन भक्ति में डूबे रहते थे। यदि उनमें भारत भक्ति होती तो उनकी ऐसी दुर्दशा नहीं होती, जैसी आज है। उन्हें उन दिनों रुकम्मू और चीकम्मू कहा जाता था। वे अब भाकम्मू हो गए हैं लेकिन वे सिर्फ केरल में सिमटकर रह गए हैं।

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

आज जरूरत इस बात की है कि देश के हर नागरिक में सच्ची भारतीयता पैदा की जाए, वह चाहे किसी भी विचारधारा या मजहब या पंथ या संप्रदाय को माने। मुझे खुशी है कि इस मूल विचार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत दो-टूक शब्दों में बार-बार गुंजा रहे हैं। यह विचार शासन की नीतियों, आचरण और बयानों में भी प्रकट होना चाहिए।

(लेखक सुप्रसिद्ध पत्रकार और स्तंभकार हैं।)

चाणक्य नीति

हाथी का शरीर कितना विशाल है लेकिन एक छोटे से अंकुश से नियंत्रित हो जाता है। एक दिया घने अन्धकार का नाश करता है, क्या अँधेरे से दिया बड़ा है। एक कड़कती हुई बिजली एक पहाड़ को तोड़ देती है, क्या बिजली पहाड़ जितनी विशाल है। जी नहीं! बिलकुल नहीं। वही बड़ा है जिसकी शक्ति छा जाती है। इससे कोई फरक नहीं पड़ता की आकार कितना है।

काम की बात

अपनी उर्जा को चिंता करने में खत्म करने से बेहतर है, इसका उपयोग समाधान ढूंढने में किया जाए।

एक सलाह

हमारी समस्या का समाधान केवल हमारे पास है, दूसरों के पास तो केवल सुझाव है।

बोरवेल की बलि चढ़ते बच्चे

योगेश कुमार गोयल

एक और मासूम बच्चे ने पिछले दिनों बोरवेल के अंदर दम तोड़ दिया। घटना मध्य प्रदेश के निवाड़ी जिले के सैतपुरा गांव की है, जहां बोरवेल में गिरे चार वर्षीय मासूम प्रह्लाद को चार दिनों की जद्दोजहद के बाद अंततः मृत ही बाहर निकाला जा सका। सैतपुरा गांव के हरकिशन कुशवाहा का चार वर्षीय पुत्र प्रहलाद परिजनों के साथ खेत पर गया था, जहां परिजनों द्वारा घटना से पांच दिन पूर्व ही खेत में 200 फुट गहरा 9 इंच चौड़ा बोर कराया गया था। प्रहलाद खेलते-खेलते बोर के पास चला गया और अचानक उस गहरे बोर में जा गिरा। पता चलते ही परिजनों द्वारा आनन-फानन में प्रशासन को सूचित किया गया, जिसके बाद हालांकि बचाव दल में शामिल एसडीआरएफ, एनडीआरएफ तथा अन्य विशेषज्ञों की टीम द्वारा करीब 90 घंटे तक रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया लेकिन मासूम को बचाया नहीं जा सका और इस प्रकार खुला बोरवेल एक और मासूम को जिंदा निगल गया।

थोड़े-थोड़े अंतराल पर लगातार सामने आते ऐसे दर्दनाक हादसे काफी चिंताजनक हैं लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि ऐसे हादसों पर पूर्णविराम लगाने के लिए कहीं कोई कारगर प्रयास नहीं दिखता। बोरवेल हादसे पिछले कुछ वर्षों से जागरुकता के बावजूद निरन्तर सामने आ रहे हैं किन्तु इनसे कोई सबक सीखने को तैयार नहीं दिखता। ऐसे मामलों में अक्सर सेना-एनडीआरएफकी बड़ी विफलताओं को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं कि अंतरिक्ष तक में अपनी धाक दिखाने में सफल हो रहे भारत के पास चीन तथा कुछ अन्य देशों जैसी वो स्वचालित तकनीकें क्यों नहीं हैं, जिनका इस्तेमाल कर ऐसे मामलों में बच्चों को अपेक्षाकृत काफी जल्दी बोरवेल से बाहर निकालने में मदद मिल सके।

सवाल यह भी हैं कि आखिर बार-बार होते ऐसे दर्दनाक हादसों के बावजूद देश में बोरवेल और ट्यूबवैल के गड्ढे कब तक इसी प्रकार खुले छोड़े जाते रहेंगे और कबतब मासूम जानें इनमें फंसकर इसी तरह दम तोड़ती रहेंगी। आखिर कबतक मासूमों की जिंदगी से ऐसा खिलवाड़ होता रहेगा? कोई भी बड़ा हादसा होने के बाद प्रशासन द्वारा बोरवेल खुला छोड़ने वालों के खिलाफ अभियान चलाकर सख्ती की बातें तो दोहरायी जाती हैं लेकिन बार-बार सामने आते ऐसे हादसे यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि सख्ती की ये सब बातें कोई घटना सामने आने पर लोगों के उपजे आक्रोश के शांत होने तक ही बरकरार रहती हैं। ऐसे हादसों के लिए बोरवेल खुला छोड़ने वाले खेत मालिक के साथ-साथ ग्राम पंचायत और स्थानीय प्रशासन भी बराबर के दोषी होते हैं।

पिछले साल मध्य प्रदेश के देवास जिले में खातेगांव कस्बे के उमरिया गांव में हीरालाल नामक व्यक्ति को अपने खेत में सूखा बोरवेल खुला छोड़ देने के अपराध में जिला सत्र न्यायालय ने दो वर्ष सश्रम कारावास तथा 20 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई थी। अदालत ने अपने आदेश में कहा था कि लोग बोरवेल कराकर उन्हें इस प्रकार खुला छोड़ देते हैं, जिससे उनमें बच्चों के गिरने की घटनाएं हो जाती हैं और समाज में बढ़ रही लापरवाही के ऐसे मामलों में सजा देने से ही लोगों को सबक मिल सकेगा। अगर मध्य प्रदेश में जिला अदालत के उसी फैसले की तरह ऐसे सभी मामलों में त्वरित न्याय प्रक्रिया के जरिये दोषियों को कड़ी सजा मिले, तभी लोग खुले बोरवेल बंद करने को लेकर सक्रिय होंगे अन्यथा बोरवेल इसी प्रकार मासूमों की जिंदगी छीनते रहेंगे और हम ऐसी मासूम मौतों पर घड़ियाली आंसू बहाने तक ही अपनी भूमिका का निर्वहन करते रहेंगे।

अबतक अनेक मासूम जिंदगियां बोरवेल में समाकर जिंदगी की जंग हार चुकी हैं किन्तु विडम्बना है कि सुप्रीम कोर्ट के सख्त निर्देशों के बावजूद कभी ऐसे प्रयास नहीं किए गए, जिससे ऐसे मामलों पर अंकुश लग सके। विडम्बना है कि देश में प्रतिवर्ष औसतन 50 बच्चे बेकार पड़े खुले बोरवेलों में गिर जाते हैं, जिनमें से बहुत से बच्चे इन्हीं बोरवेलों में जिंदगी की अंतिम सांसें लेते हैं। ऐसे हादसे हर बार किसी परिवार को जीवन भर का असहनीय दुख देने के साथ-साथ समाज को भी बुरी तरह झकझोर जाते हैं। भूगर्भ जल विभाग के अनुमान के अनुसार देशभर में करीब 2.70 करोड़ बोरवेल हैं लेकिन सक्रिय बोरवेलों की संख्या, अनुपयोगी बोरवेलों की संख्या तथा उनके मालिक का राष्ट्रीय स्तर का कोई डाटाबेस मौजूद नहीं है। बोरवेलों में बच्चों के गिरने की बढ़ती घटनाओं के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने 2010 में ऐसे हादसों पर संज्ञान लेते हुए कुछ दिशा-निर्देश जारी किए थे। 2013 में कई दिशा-निर्देशों में सुधार करते हुए नए दिशा-निर्देश जारी किए गए थे, जिनके अनुसार गांवों में बोरवेल की खुदाई सरपंच तथा कृषि विभाग के अधिकारियों की निगरानी में करानी अनिवार्य है जबकि शहरों में यह कार्य ग्राउंड वाटर डिपार्टमेंट, स्वास्थ्य विभाग तथा नगर निगम इंजीनियर की देखरेख में होना जरूरी है।

अदालत के निर्देशानुसार बोरवेल खुदवाने के कम से कम 15 दिन पहले डी.एम., ग्राउंड वाटर डिपार्टमेंट, स्वास्थ्य विभाग और नगर निगम को सूचना देना अनिवार्य है। बोरवेल की खुदाई से पहले उस जगह पर चेतावनी बोर्ड लगाया जाना और उसके खतरे के बारे में लोगों को सचेत किया जाना आवश्यक है। इसके अलावा ऐसी जगह को कंटीले तारों से घेरने और उसके आसपास कंक्रीट की दीवार खड़ी करने के साथ गड्ढ़ों के मुंह को लोहे के ढक्कन से ढंकना भी अनिवार्य है लेकिन इन दिशा-निर्देशों का कहीं पालन होता नहीं दिखता। दिशा-निर्देशों में स्पष्ट है कि बोरवेल की खुदाई के बाद अगर कोई गड्ढा है तो उसे कंक्रीट से भर दिया जाए लेकिन ऐसा न किया जाना हादसों का सबब बनता है। ऐसे हादसों में न केवल मासूमों की जान जाती है बल्कि रेस्क्यू ऑपरेशनों पर अथाह धन, समय और श्रम भी नष्ट होता है।

प्रायः होता यही है कि तेजी से गिरते भू-जल स्तर के कारण नलकूपों को चालू रखने के लिए कई बार उन्हें एक जगह से दूसरी जगह स्थानांतरित करना पड़ता है और पानी कम होने पर जिस जगह से नलकूप हटाया जाता है, वहां लापरवाही के चलते बोरवेल खुला छोड़ दिया जाता है। कहीं बोरिंग के लिए खोदे गए गड्ढ़ों या सूख चुके कुओं को बोरी, पॉलीथीन या लकड़ी के फट्टों से ढांप दिया जाता है तो कहीं इन्हें पूरी तरह से खुला छोड़ दिया जाता है और अनजाने में ही कोई ऐसी अप्रिय घटना घट जाती है, जो किसी परिवार को जिंदगी भर का असहनीय दर्द दे जाती है। न केवल सरकार बल्कि समाज को भी ऐसी लापरवाहियों को लेकर चेतना होगा ताकि भविष्य में फिर ऐसे दर्दनाक हादसों की पुनरावृत्ति न हो। देश में ऐसी स्वचालित तकनीकों की भी व्यवस्था करनी होगी, जो ऐसी विकट परिस्थितियों में तुरंत राहत प्रदान करने में सक्षम हों।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

हर शाख पे उल्लू बैठा है अंजामें गुलिस्तां क्या होगा

क्या नया आईसीयू लोगों को स्थानीय स्वास्थ्य अमले पर विश्वास पैदा करवा पाएगा ?

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मील मंसूरी

एक मशहूर कहानी है लकड़हारे की। एक गांव में एक लकड़ाहारा रहा करता था जो रोज जंगल में लकड़ी काटने के लिए जाया करता था। एक दिन उसे गांव वालो से मजाक करने की सूझी और वह लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए चिल्लाने लगा कि बचाव... बचाव... शेर आ गया। लकड़हारे की यह पुकार सुनकर गांव के लोग दौड़ कर उसकी तरफ गए और देखा तो वहां कोई शेर नहीं था। लकड़हारे को इस हरकत में मजा आने लगा और उसने कुछ दिन लोगों को इसी तरह बेवकूफ बनाया। अब गांव के लोग भी समझ गए थे कि लकड़हारा गांव के लोगों को परेशान कर रहा है। एक दिन लकड़हारा रोज की तरह जंगल में लकड़ी काटने के लिए गया हुआ था कि अचानक वहां सच में शेर आ जाता है। लकड़हारा उस शेर को देखकर चिल्लाने लगता है, लेकिन गांव वाले उसके चिल्लाने को अनदेखा कर देते है। क्योंकि गांव वालों को अब उसकी बात पर विश्वास नहीं रहता।

कुछ ऐसी ही स्थिति में आज जिला चिकित्सालय व उसका स्वास्थ्य अमला आ चुका है। कहने को तो जिला चिकित्सालय आईएसओ प्रमाणित है। बावजूद इसके जिले के अधिकांश लोग आज भी आपतकालीन स्थिति तो छोड़ीये सामान्य बीमारी के ईलाज के लिए जिले से बाहर अन्य जिलों या अन्य प्रदेशों में जाते है। वजह सिर्फ यह है कि इन लोगों में जिला चिकित्सालय व स्वास्थ्य अमले पर विश्वास नहीं रहा। संपन्न व सामान्य वर्ग के लोग तो जिला चिकित्सालय में कदम रखना भी उचित नहीं समझते। हां गरीब तबका जरूरी मजबूरी वश जिला चिकित्सालय की शरण लेता है। इनमें भी कई गरीब तो ऐसे होते है जो कर्ज माथे लेकर बाहर जाना ही उचित समझते है। विश्वास के नाम पर यहां जिला चिकित्सालय में प्रसुति, महिला रोग, कुपोषण, टीवी, बच्चों आदि के लिए अलग- अलग चिकित्सा ईकाई है। मगर यह सब वैसा ही है जैसा लकड़हारे का चिल्ला - चिल्लाकर गांव वालों को बेवकूफ बनाना। इसका प्रमाण यह है कि आए दिन जिला चिकित्सालय में बरती जा रही लापरवाहीयां अखबारों के पन्नों की शोभा बनती रहती है। क्रिटीकल केसेस में तो जिला चिकित्सालय को रेफर करने का तमगा वर्षों से लगा हुआ है। कुल मिलाकर आपात स्थिति के लिए जिला चिकित्सालय का अमला कभी तैयार नहीं दिखाई देता और मरीज को गुजरात या इंदौर के अस्पतालों में रेफर कर दिया जाता।

अब जिला चिकित्सालय को एक और सुविधा मिलने जा रही है। वह है 10 बेड का सर्वसुविधा युक्त आईसीयू। यह एक अच्छी बात है लेकिन इसका तब तक कोई फायदा नहीं होगा जब तक लोगों में जिला चिकित्सालय के स्वास्थ्य अमले पर विश्वास न हो। और अगर स्वास्थ्य अमला लोगों में यह विश्वास पैदा नहीं कर सकता तो मान लिजिए कि बस कुछ ही वर्षों में इस नवीन आईसीयू की हालत बद से बदतर होते देर नहीं लगेगी। स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों को चाहिए कि वे लोगों में विश्वास पैदा करे। अगर लोगों में विश्वास होगा तो ही जिला चिकित्सालय में बने नए सर्वसुविधा युक्त आईसीयू की सार्थकता सिद्ध होगी। वरना स्थिति उस लकड़हारे की तरह हो जाएगी जिसके सामने शेर खड़ा था, लेकिन अविश्वसा के कारण गांव के लोग उसे बचाने नहीं आए।

वैसे ही लोगों में जिला चिकित्सालय के स्वास्थ्य अमले को लेकर कुछ अच्छी छवी तो नहीं बनी हुई है। आए दिन अखबारों में जिला चिकित्सालय में चल रहे भ्रष्टाचार, अव्यवस्थाओं, अनियमितताओं को लेकर सुर्खियों में बना रहता। खरीद फरोख्त में हुए भ्रष्टाचार के किस्से भी अखबारों के जरीए लोगों तक पहुंचते रहते है। स्वास्थ्य सुविधाओं में बरती जा रही लापरवाहीयां भी आम है।

बीते वर्षों में जिले में आए कई कलेक्टरों में जिला चिकित्सालय का दौरा किया। हालात देखकर किसी ने सख्ती अपनाई तो किसी ने हिस्सा पाती लेकर मौन धारण किया। वर्तमान कलेक्टर सिंह ने भी जिला चिकित्सालय का दौरा किया और निरीक्षण में हल्की -फुल्की सख्ती दिखाकर कई दिशा निर्देश दिए। अब देखना यह है कि सिंह के दौरे से जिला चिकित्सालय में कितना व कैसा परिवर्तन आता है या फिर स्थिति वहीं ढाक के तीन पात बनी रहती है। क्योंकि इससे पहले भी यहां कई आए साहब, गए साहब हो गए और जिला चिकित्सालय के ढर्रे में कोई परिवर्तन नहीं आया। जिला चिकित्सालय को मिलने वाली सुविधाओं, उपकरणों की हम बुराई नहीं कर रहे लेकिन किसी ने कहा है कि 'हर शाख पे उल्लू बैठा है अंजामें गुलिस्तां क्या होगा'।

भारत का दुर्भाग्य

डॉ.अरविन्द प्रेमचंद जैन, लेखक

अनादि कल से हर राजदरबार ऐसे असामाजिक तत्वों की जरुरत रहती रही हैं कारण सीधे सादे लोगों पर राजा के बाद ऐसे ही लोग हुकूमत करते हैं। कारण राजा(मुख्य मंत्री) ऊपर से साफसुथरे दिखाई देते हैं और अंदर से कलुषता की मूर्ति होते हैं। वे खुद कहते हैं मैं अधिक असामाजिक तत्वों ,गुंडों ,चोर अपराधियों का मुखिया हूँ तो मैं उनसे बड़ा गुंडा हूँ। जिन पर मेरा नियंत्रण रहता हैं।

मजेदार बात यह हैं की चुने हुए प्रतिनिधि यानी विधायक जो कानून को बनाने वाले हैं वे कानून तोड़ने में पारंगत हैं, उनसे अच्छा कानून का विधायक कौन होगा? प्राप्त आकंड़ों के अनुसार 64: विधायक यानी 163 अपराधी हैं जिनमे हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण, महिलाओं के खिलाफ अपराध आदि आदि हैं।

बिहार में मंत्रिमंडल बनाने में कोई परेशानी नहीं होगी। जिस विधायक के ऊपर अधिकतम अपराध उसे गृह मंत्री, जो अशिक्षित हो उसे शिक्षा मंत्री, जो वकील अपराधी हो उसे कानून मंत्री, जिसने अधिकतम बलात्कार किया उसे स्वास्थ्य मंत्री ,रेत माफिया को खनिज मंत्री ,जिसने जितने अधिक समय जेल में बिताया उसे जेल मंत्री इत्यादि बनाया जा सकता हैं। यानी अली बाबा चालीस चोर का मंत्रिमंडल बनना चाहिए। इस पुण्य पर्व पर सभी अपराधियों को अपराध मुक्त घोषित कर संवैधानिक पदों पर आसीन किया जाय जिससे संविधान की मर्यादा भी बनी रहे और कोई उनसे न कह सके अपराधी, जिसने अंगुली उठाई उसको परिणाम भुगतना पड़ेगा। इस बात पर चिंतन करना जरुरी हैं की जब न्यायालय ध्संसद ध्विधान सभा द्वारा कई बार इस बात की घोषणा की हैं की कोई भी अपराधी को संवैधानिक पदों पर नहीं बैठना या चुनना चाहिए। चुनावी पर्चे की जाँच के समय ही उनका फॉर्म इंकार या रद्द किया जा सकता हैं पर जीतने के बाद इस बात से अवगत कराना कितना उचित हैं और इससे क्या फायदा या नुक्सान उनका। जनता को तो उनकी दानव वृत्ति के दमन का शिकार बनना पड़ेगा।

जब ऐसे लोग भारत के भाग्य विधाता होंगे तब उनसे न्याय, नैतिकता, सुरक्षा की बात करना बेमानी होंगी। कुछ दिनों में ये शब्द मात्र शब्दकोष की शोभा बढ़ाएंगे। ये देश का दुर्भाग्य हैं ये सब जबरदस्ती के नेता हैं और जनता को शिरोधार्य करना पड़ता हैं। हम ऐसे अपराधियों, चोरों, लुच्चे-लफंगों से उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

बुरा वक्त भी बहुत कुछ सिखाता है

साल 2020 काफी चुनोतियों भरा है। इस साल जो घटनाएं घटित हुई है वो न ही कभी गुजरे जमाने मे देखी गई होगी और न ही आने वाले वक्त में फिर कभी कोई इस तरह की घटनाओं की कल्पना कर रहा होगा। ये सच है कि बीते कुछ महीनों में जिन्दगी की रफ्तार पर ब्रेक लग गया था। इस भागदौड़ भरी जिंदगी में कुछ पल जरूर मिले जब हम अपने और अपनों के लिए सोच सके। ये अलग बात है कि सभी के लिए ये पल अच्छे नहीं रहे, लेकिन इन चंद पलो ने ही हमे यह एहसास करा दिया कि हर काम हमारे मन मुताबिक हो यह जरूरी नही है। फिर चाहे कोई कितनी भी अच्छी प्लांनिग क्यों न कर ले? यहां इस बात का यह मतलब कतई नही है कि इंसान कल की परवाह करना ही छोड़ दे।

साल 2020 ने जो यादे और अनुभव दिए है वो जीवन मे कभी न भूलने वाले पलो की तरह हमेशा साथ रहेंगे, क्योंकि समय चाहे अच्छा रहा या फिर बुरा रहा लेकिन ये वही पल थे, जब इस भागती जिंदगी में लोग अपने लिए रुक से गए थे। जिसे घर-परिवार के लिए समय नही था। उसे घर मे कैद होकर रह जाना अपनो के बीच समय गुजारना वक्त की जरूरत बन गया था।

अब शायद फिर कभी ये पल न आये, लेकिन आज ये कहावत जरूर सच सी लगने लगी है कि बुरा वक्त कुछ अच्छा जरूर सीखा कर ही जाता है। वक्त चाहे जैसा भी हो गुजर ही जाता है। रह जाती है सिर्फयादें। जो हमें यह अहसास कराती है कि गुजरे पलो में हमने क्या गलतियां की है।

कोरोना महामारी ने हमारी आदतें और जीवनशैली को बदल दिया है। जिस भारतीय संस्कृति में हाथ जोड़कर प्रणाम करने की जिस परंपरा को हमने बिसार दिया था। आज फिर देश उस परम्परा की ओर लौट रहा है। पहले से कही ज्यादा अब लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे है। योग प्राणायाम को अपनी जिंदगी का हिस्सा बना रहे है। अब समय आ गया है जब हम हदों में रहना सीख ले। प्रकृति के साथ जो निर्दयी व्यवहार किया है उस पर अब लगाम लगा दे। वार्ना प्रकृति के प्रकोप से बच पाना मानव के लिए बहुत कठिन हो जाएगा।

आज तापमान बढ़ने की वजह मानव द्वारा प्रकृति का दोहन करना है। आज बाढ़ भूकम्प जैसी घटनाएं जो वर्षों के अंतराल में घटित होती थी अब ऐसा लगता है मानो ये घटनाएं हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गयी है। क्या ये घटनाएं मानव को आईना दिखाने के लिए काफी नही है?

एक कल्पना करें कि प्रकृति यदि अनाज उगाना बन्द कर दे। नदियां अपने जलाशय का पानी इंसान को न दे , जिन पेड़ो की इंसान अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए बलि चढ़ा रहा वह यदि फल न दे, अपनी शीतलता देना छोड़ दे, तो इस स्वार्थी इंसान का क्या होगा? स्वाभाविक सी बात है, कि मानव-जीवन खतरे में पड़ जाएगा। जब प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना ही निराधार है तो मानव क्यों अपने विनाश के बीज स्वयं रोप रहा है? आज कोरोना महामारी है, बाकी महामारियों की तरह इसका भी तोड़ मानव एक दिन शायद ढूंढ ही लेगा लेकिन कल फिर कोई और महामारी होगी। इन महामारियों की जड़ में जाए तो यह साफपता चल ही जायेगा कि कही न कही ये मानव की भूल के परिणामस्वरूप ही पैदा हुई है।

सोनम लववंशी

कोरोना महामारी भी बाकी महामारियों की तरह एक दिन खत्म हो ही जाएगी। साथ ही हमारी जीवन जीने की पद्धति को भी बदल देगी। आज हम घरों में रहकर अपने जरूरी काम कर रहे है। देश ऑनलाइन शिक्षा की ओर बढ़ रहा है। यहां तक की दफ्तरों के काम भी ऑनलाइन हो रहे है। कल जब परिस्थिति सामान्य होगी तो ये परिवर्तन हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गए होंगे। हमे इन बदलावों को सहज स्वीकार करना होगा। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमे अपने जीवन मूल्यों को भी ध्यान रखना होगा। तभी मानव-जीवन निरंतर गतिशील रह पाएगा।

फिर चौंकाया भाजपा नेतृत्व ने

डॉ.प्रभात ओझा

बिहार में सरकार गठन की कवायद के बीच रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को पर्यवेक्षक बनाकर पटना भेजा गया, तभी राजनीतिक समीक्षकों को समझ लेना चाहिए था कि भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व बिहार के बारे में कुछ नया करने जा रहा है। बिहार में बीजेपी के नेतृत्व वाली सरकार नहीं बनी और कभी पार्टी नेतृत्व को पर्यवेक्षक भेजने की भी जरूरत नहीं पड़ी। कहा जाता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का ही पार्टी नेतृत्व पर प्रभाव है और आमतौर पर उनके फैसले चौंकाने वाले हुआ करते हैं।

पटना में भी यही हुआ। शुरू में भारतीय जनता पार्टी के राज्यस्तरीय कुछ नेता जरूर उत्साह में थे कि अब विधानसभा में जेडीयू से बड़ी पार्टी बनने के बाद भाजपा का ही सीएम होना चहिए। पहले ही नीतीश कुमार को नेता घोषित कर चुकी पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व के लिए इसमें बदलाव कहीं से भी मुनासिब नहीं होता। पीएम नरेंद्र मोदी ने जल्द समझा दिया कि बिहार के कार्यकर्ता नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही 'संकल्प सिद्धि' करेंगे। मोदी का यह कथन चौंकाने वाला नहीं था, पर पटना में नीतीश कुमार को एनडीए विधायकों की संयुक्त बैठक में नेता चुने जाने के बाद दूसरी खबर चौंकाने वाली बन गई। भाजपा विधायकों की बैठक में तारकिशोर प्रसाद और रेनू देवी को क्रमशः विधायक दल का नेता और उपनेता निर्वाचित किया गया।

भाजपा विधायकों में ही नहीं, तेज घटनाक्रम पर नजर रखने वालों में भी निवर्तमान डिप्टी सीएम सुशील मोदी के भविष्य के बारे में ऊहापोह बरकार था। हालांकि ऐसे सभी लोगों को विधायक दल का नया नेता और उपनेता चुने जाने के बाद ही इसके निहितार्थ को समझ लेना चाहिए था। मुख्यमंत्री का पद साथी दल को देने के बाद दूसरी बड़ी पार्टी का नेता मंत्रिपरिषद में गया तो कोई बड़ा पद ही हासिल करेगा। आखिर सुशील मोदी के ट्वीट से ऊहापोह में रहे लोगों का भ्रम दूर हुआ। उनके ट्वीट के अंत में है कि करीब 40 साल तक पार्टी और संघ ने उन्हें बहुत कुछ दिया। पार्टी में कार्यकर्ता का पद उनसे नहीं छीना जा सकता।

अभी चर्चा होती रहेगी कि सुशील मोदी का भविष्य क्या है। लगता है इसपर विचार का अभी सही वक्त नहीं है। सुशील मोदी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के करीबी माने जाते हैं। सुशील मोदी को आगे नहीं कर बड़े मोदी ने साफकर दिया है कि सबकुछ नीतीश कुमार के हिसाब से नहीं होगा। भाजपा नेतृत्व चौंकाने वाले फैसले करता ही रहता है और अभी बहुत कुछ तय होना है। फिलहाल सुशील मोदी को कहीं से भी मंत्रिपरिषद में शामिल करने की संभावना खत्म हो गई है।

अब कटिहार के तारकिशोर प्रसाद और बेतिया की रेनू देवी के साथ पूर्व विधायक और राममंदिर ट्रस्ट के सदस्य कामेश्वर चौपाल के नाम उभरे हैं, तो इसके भी मायने हैं। तारकिशोर प्रसाद सुशील मोदी के जातीय समुदाय से ही आते हैं, जबकि रेनू देबी दलित वर्ग से हैं। दलित समुदाय से आने वाले कामेश्वर चौपाल वह व्यक्ति हैं, जिन्होंने रामजन्म भूमि निर्माण के लिए पहली ईंट रखी थी। हालांकि उन्होंने डिप्टी सीएम पद पर अपनी चर्चा को सिर्फ कयास बताया है। बहरहाल, पिछड़े और अति दलित के साथ सामाजिक सामंजस्य साधने के लिए भाजपा में मंगल पाण्डेय भी हैं।

जहां तक उपमुख्यमंत्री पद की बात है, भाजपा ने चौंकाने वाला निर्णय कर लिया है। रक्षा मंत्री से सवाल होने पर जवाब भी यही था कि फैसले में देर नहीं हुई है। फैसले की जानकारी समय पर दे दी जायेगी। वह समय भी कल 16 नवंबर ही है।

अर्थव्यवस्था प्रोत्साहन पैकेजों के भरोसे

केंद्र सरकार की मानें तो उसने पिछले हफ्ते अर्थव्यवस्था के लिए तीसरा प्रोत्साहन पैकेज घोषित किया। बताया गया कि यह 2,65,080 करोड़ रुपयों का पैकेज है। इसमें रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए एक नई योजना, तनाव से गुजर रहे 26 सेक्टरों के लिए कुछ कदम, और संपत्ति खरीदने वालों और रियल एस्टेट डेवलपरों के लिए कुछ कदम हैं। इसके तहत भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के साथ पंजीकृत कंपनियां अगर नए लोगों को या मार्च से सितंबर के बीच नौकरी गंवा चुके लोगों को नौकरी पर रखती हैं, तो उन्हें सरकार की तरफसे कुछ लाभ मिलेंगे। मगर सवाल यह है कि जिस वजह से लोगों को निकाला गया अगर वे कायम रहेंगी तो कौन सी कंपनी किसी को नौकरी पर रखेगी? साफहै कि सरकार ने पिछले दो पैकेजों और दूसरे छोटे छोटे कदमों से कोई सबक नहीं सीखा है। मार्च के अंत में केंद्र सरकार महामारी से होने वाले आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए पहले आर्थिक पैकेज लेकर आई थी, जिसे प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना कहा गया था।

मई में कोविड-पैकेज की दूसरी किस्त आई। इसमें किसानों, प्रवासी श्रमिकों और रेहड़ी-पटरी वालों के लिए कुछ कदम थे। सरकार का दावा है कि तीसरे चरण के पैकेज के साथ वो अभी तक कुल 29,87,641 करोड़ रुपयों के प्रोत्साहन कदमों की घोषणा कर चुकी है। जबकि तमाम जानकारों का यह कहना रहा है कि अर्थव्यवस्था को जो घाटा हुआ है, उसकी भरपाई के लिए जितनी रकम के पैकेज की आवश्यकता थी, उतनी धनराशि कभी सरकार ने जारी ही नहीं की। फिर जिन कदमों की घोषणा सरकार ने की भी उनमें सरकारी खर्च का अनुपात बहुत कम था। ऐसे में इन पैकेजों से वास्तविक राहत मिलने की उम्मीद बहुत कम थी। अर्थव्यवस्था में मूल संकट मांग का है। मतलब लोग आवश्यक चीजों के अलावा और कुछ खरीद नहीं रहे हैं। लॉकडाउन हटने के बाद मांग कुछ हद तक बढ़ी है, लेकिन उतनी नहीं, जिससे की अर्थव्यवस्था में गति या खुशहाली आ सके। आम अनुभव है कि इस समय त्योहारों का मौसम होने के बावजूद बाजारों में उतनी खरीद-बिक्री नहीं हो रही है, जितनी इस सीजन में होती थी। इस समय सिर्फ टेलीकॉम, फार्मा, आईटी और एफएमसीजी जैसे चुनिंदा क्षेत्रों को छोड़ कर बाकी सब क्षेत्रों में गिरावट चल रही है। यानी यह नहीं कहा जा सकता कि पूरी अर्थव्यवस्था में सुधार आ गया है। मगर सरकार पैकेज के अपने नजरिए पर कायम है।

दवा से ही नही दुआ से भी ठीक होते है मरीज

श्रीगोपाल नारसन

होम्योपैथी चिकित्सा क्षेत्र में एक बड़ा नाम है डॉ मधुसूदन शर्मा।भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की के चिकित्सालय में बतौर होम्योपैथी चिकित्सक सेवारत डॉ मधुसूदन शर्मा गत चार दशकों से होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान के साथ आध्यात्मिक साधना का प्रयोग कर जनकल्याण कर रहे है। उनका स्पष्ट मानना है कि मरीज दवा से ही नहीं दुआ से भी ठीक हो जाते है। यानि मरीज के प्रति सकारात्मक सोच, उसके प्रति शुभकामना दवा को ओर ज्यादा कारगर बना देती है। वे बताते है कि अपने देश मे 10 से 15 प्रतिशत लोग ही अपने स्वास्थ्य की देखभाल के लिए होम्योपैथी पर निर्भर है जबकि होम्योपैथी दवा दूसरी सबसे लोकप्रिय चिकित्सा प्रणाली मानी जाती है। डॉ मधुसूदन के शब्दों मे, भारत में होम्योपैथी का प्रयोग डेढ़ सदी से अधिक समय से प्रयोग किया जा रहा है। आज होम्योपैथी देश की जड़ों में इतनी अच्छी तरह से घुल-मिल गई है कि इसे एक राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में पहचान मिली है। तभी तो यह चिकित्सा बड़ी संख्या में लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी शक्ति इसके प्रभाव में निहित है, क्योंकि यह मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और शारीरिक स्तरों पर आंतरिक संतुलन के संवर्धन के माध्यम से बीमार व्यक्ति के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण अपनाती है। दरअसल 'होम्योपैथी' दो ग्रीक शब्दों, होमोइस अर्थात समान और पैथोस अर्थात करुणा से बना है। होम्योपैथी का सरल अर्थ है, दवा की ऐसी कम खुराकों द्वारा किसी रोग का उपचार। यह चिकित्सा के प्राकृतिक नियम 'सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंतर' पर आधारित है जिसका अर्थ है 'किसी को उसके समान ठीक करना'। डॉ. सैम्युअल हैनिमैन द्वारा 19 वीं सदी के आरम्भ में होम्योपैथी चिकित्सा का एक वैज्ञानिक आधार दिया। यह चिकित्सा दो शताब्दियों से पीड़ित मानवता की सेवा कर रही है। होम्योपैथी में 'उपचार' एक तकनीकी शब्द है, जो उस पदार्थ के लिए संदर्भित होता है, जिसे एक प्रक्रिया के साथ तैयार किया गया हो और रोगी के लिए उपयोग किया गया हो। 'एक दवा या चिकित्सा जो रोग को ठीक करती है या दर्द से निजात दिलाती है।' वही होम्योपैथिक चिकित्सक उपचार है।

होम्योपैथी उपचार में कई पौधे, खनिज, और कृत्रिम पदार्थों का उपयोग होता है। जैसे आर्सेनिकम अल्बम (आर्सेनिक ऑक्साइड), नेट्रम म्यूरिआटीकम (सोडियम क्लोराइड), लाशेसिस म्यूता, और थायरोइडीनम (थायराइड हार्मोन)। होम्योपैथ नोसोडस, जो मल, मूत्र, और सांस निर्वहन, रक्त, ऊतक जैसे रोगयुक्त या पैथोलोजिकल उत्पादों से बनाए जाते हैं, द्वारा भी उपचार करते हैं। स्वस्थ नमूनों से तैयार होम्योपैथिक उपचारों को सार्कोड्स कहा जाता है। होम्योपैथिक उपचार तैयार करने के लिए क्वाट्र्ज और ओइस्टर के कवच सहित अघुलनशील ठोस पदार्थों को पीसने हेतु मोर्टार और मूसल का प्रयोग किया जाता है।

बीमारियों के लिए उपचार तैयार करने के लिए होम्योपैथ डाइनामाइजेशन या पोटेनटाइजेशन नामक एक प्रक्रिया का उपयोग करते हैं। होम्योपैथी जनक हैनिमैन उन पदार्थों के उपयोग का समर्थन किया करते थे जो उपचार किए जा रहे रोग के समान लक्षण उत्पन्न करते हैं। डॉ मधुसूदन शर्मा एक संवेदनशील आध्यात्मिक चिंतक भी है।उनके स्वास्थ्य विषय पर 400 से अधिक शोध लेख छप चुके है। योगदा से जुड़े मधुसूदन ने कोरोना काल के दौरान कोरोना बचाव उपकरण विभिन्न अस्पतालों व जरूरतमन्दो को निःशुल्क प्रदान कर मानवीय मिशाल भी कायम की है। कोरोना के कारण लॉकडाउन में आम और खास की हालत को उन्होंने अपनी कविता खुद्दारी में परिभाषित किया है।

खुद्दारी

महानगरों की गगनचुंबी इमारतें
कंक्रीट का घना जंगल ही तो है
लगता है जैसे अट्टहास कर रही हो
उन्ही मजदूरों पर जिन्होंने
उन्हें यह आकार दिया
ईंट, बजरी, पत्थरों के साथ
अपना पसीना बहाकर
बनाया था किसी के लिए
उनके सपनों का एक महल
या फिर कहे एक नगर
ताकि इसमें वह रह सके
जिनके पास धन तो है
पर कुछ अच्छा सोचने का
दिमाग नही जिसकी दरकार है
उनकी रगों में नही दौड़ता
इंसानियत का ताजा खून
वह तो रक्तहीन से लगते है
एक अनपढ़ गंवार की तरह
तभी तो कुत्ते बिल्ली उनके
वातानुकूलित कमरों में
आराम फरमाते हैं
जो शैम्पू से नहलाये जाते हैं
पौष्टिक भोजन भरपूर खाते हैं
नही मिलता तो सिर्फउन्हें
जिन्होंने बनाया यह जंगल
बिना वृक्षों का कंक्रीट जंगल
वे ही तो नंगे पैर,भूख प्यासे
जा रहे थे मीलो पैदल
अपने बीवी बच्चों के साथ
अपनी जड़ों की ओर
अपनो के बीच रहने के लिए
परिवार का सुख पाने के लिए
रुखी सूखी रोटी ही सही
खा लेंगे खुद्दारी के साथ
कम से कम नहीं होगी कृतघ्नता, ओर न ही संवेदनहीनता।

न्यूज ब्रीफ

एसडीएम ने की समीक्षा

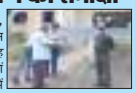

माही की गूंज, खरगोन। खरगोन एसडीएम सत्येंद्रसिंह ने बुधवार को गोगावां जनपद के सभाकक्ष में जनपद स्तरीय अमले के साथ शासन की विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों की समीक्षा की। बैठक में उन्होंने पीएचई विभाग द्वारा वर्तमान में जल मिशन के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों और गोगावां जनपद में मनरेगा द्वारा किए गए कार्यों व भुगतान को लेकर समीक्षा की। साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य विभाग और जनपद स्तर के कार्यों के साथ राजस्व विभाग की आबादी सर्वे एवं पीएम किसान योजना के विषय को लेकर समीक्षा की। इसके पश्चात उन्होंने गोगावां में बन रहे आईटीआई नवीन भवन और कन्या शिक्षा परिसर का अवलोकन किया। अवलोकन के दौरान उन्होंने ठेकेदार को मार्च 2021 तक दोनों भवन तैयार करने के निर्देश दिए।

विभिन्न पदों पर भर्ती का अवसर, भरे जाएंगे 250 पद

माही की गूंज, खरगोन। विभिन्न विभागों में सहायक संपरीक्षक, कनिष्ठ सहायक, सहायक एवं डाटा इंट्री ऑपरेटर आदि के 250 पदों पर भर्ती के लिए 29 जनवरी से 4 फरवरी 2021 तक प्रोफेशनल एग्जामिनेश बोर्ड के माध्यम से भर्ती परीक्षा होने की संभावना है। पीईबी द्वारा जारी की गई इस सूचना में संभावित तिथियों की जानकारी दी गई है, जिसके अनुसार 25 नवंबर को विस्तृत नियम पुस्तिका का प्रकाशन, 1 दिसंबर से 14 दिसंबर तक ऑनलाइन आवेदन और 10 फरवरी से 13 फरवरी 2021 तक ऑनलाईन किया जाना प्रस्तावित किया गया है।

महाविद्यालय में दस्तावेज जमा करने की तिथि में की वृद्धि

माही की गूंज, खरगोन। ऑनलाईन ई-प्रवेश समय सारणी सत्र 2020-21 सीएलसी पंचम चरण के परिप्रेक्ष्य में टीसी, माईग्रेशन एवं अन्य दस्तावेजों का सत्यापन कराकर दस्तावेज महाविद्यालयों में जमा करने की तिथि में वृद्धि करते हुए 24 नवंबर से 12 दिसंबर निर्धारित की गई है। इस आशय की जानकारी उच्च शिक्षा विभाग के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी डॉ. धीरेंद्र शुक्ल ने समस्त शासकीय, अनुदान प्राप्त अशासकीय एवं निजी अशासकीय महाविद्यालय के प्राचार्यो को पत्र के माध्यम से दी है।

नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित

माही की गूंज, खरगोन। जवाहर नवोदय विद्यालय जूनापानी सनावद में वर्ष 2021-22 में कक्षा 6टीं एवं 9वीं में प्रवेश के लिए ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित है। विद्यालय प्राचार्य एसएस वाघमरे ने बताया कि, इच्छुक विद्याथी 15 दिसंबर तक ऑनलाईन आवेदन कर सकते है।

भजन-किर्तन तथा महाआरती कर छप्पन भोग प्रसादी का हुआ वितरण

शहर के कई मंदिरों में गौ-वर्धन पूजा के दिन अन्नकूट उत्सव का हुआ आयोजन

माही की गूंज, झाबुआ।

रविवार को नव वर्ष तथा गौ-वधर्न पूजा के अवसर पर शहर के मंदिरों में विधि-विधान से गौ-माता की पूजन-आरती कर देर शाम से भगवान को अन्नकूट (छप्पन भोग) का नैवेद्य लगाकर भजन-किर्तन, महाआरती कर महाप्रसादी के रूप में छप्पन भोग का प्रसाद वितरित किया गया।

शहर के आजाद चौक के समीप श्री गौवधर्ननाथ मंदिर में रविवार को सुबह 10 बजे श्री गौवधर्न पूजा हुई। बाद शाम 5 बजे शुभ मुर्हुत में मंदिर से जुड़े वैष्णवजनों तथा श्रद्धालुओं ने सजी गौ-माता के पीछे भजन-किर्तन करते हुए मंदिर की 5 परिक्रमा की। शाम 6 बजे मंदिर के पट खोले गए। बाद सभी भक्तों ने अन्नकूट का नैवेद्य लगे श्री गौवधर्न प्रभु का दर्शन लाभ लिया। मंदिर में बैठकर वैष्णवजनों तथा श्रद्धालुओं ने भजन-किर्तन भी किए। जिसमें विशेष सहयोग मंदिर के सेवक पं. रमेश त्रिवेदी, गौकलेश आचार्य, श्याम पुरोहित, कान्हा अरोड़ा आदि ने प्रदान किया। करीब एक घंटे तक भजन चलने के बाद अन्नकूट (प्रसादी) सभी भक्तों को वितरित की गई। संपूर्ण आयोजन में कोविड के नियमों का पालन किया गया।

सत्यनारायण भगवान को छप्पन भोग लगाकर प्रसाद वितरित हुआ

शहर के राधाकृष्ण मार्ग स्थित श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार मंदिर में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी स्वर्णकार समाज झाबुआ द्वारा रविवार शाम को भगवान का विशेष श्रृंगार मंदिर के सेवक पं. प्रदीप भट्ट ने किया। भगवान को छप्पन भोग लगाया। यह भोग समाजजनों द्वारा अपने घरों से तैयार कर लाया गया। समाज अध्यक्ष ओम सोनी ने बताया कि रात्रि ठीक 7.45 बजे भगवान की महाआरती कर महाप्रसादी के रूप में छप्पन भोग का समाजजनों और सभी भक्तों को वितरण हुआ। इस दौरान समाज के युवाओं तथा बच्चों द्वारा मंदिर परिसर में जमकर आतिशबाजी भी की गई।

झाबुआ के राजवाड़ा के समीप राधा-कृष्ण सरकार का श्रृंगार कर छप्पन भोग अर्पण किया गया।

झाबुआ के श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार मंदिर में भगवान का श्रृंगार कर लगाया छप्पन भोग

प्रातः गौवधर्न पूजा कर शाम को छप्पन भोग का आयोजन

शहर के राजवाड़ा के समीप राधा-कृष्ण मंदिर पर रविवार को सुबह मंदिर से जुड़ी महिलाओं ने सूखे गौबर से गौवधर्नजी बनाकर उनकी विधि-विधान से पूजन की। शाम 4 बजे राधा-कृष्णजी का मनमोहक श्रृंगार मंदिर के महंत अजय बैरागी तथा परिवारजनों द्वारा कर भगवान को 56 भोग अर्पण किए गए। मंदिर परिसर में बैरागी परिवार तथा भक्तजनों ने समधुर भजनों पर नृत्य भी किया। मंदिर के प्रबंध ट्रस्टी मनीष बैरागी द्वारा सभी श्रद्धालुओं को दीपावली तथा गौवधर्न पूजा की शुभकामनाएं देते प्रसादी वितरण आदि किया। जो रात्रि 8 बजे तक चला। यहां भी कोविड के नियमों का पालन करते हुए आयोजन हुआ।

प्राचीन जगदीश मंदिर पर महाआरती तथा महाप्रसादी का हुआ भव्य आयोजन

- राष्ट्रीय गौ-सेवा संघ ने गौ-पूजन कर आरती की

माही की गूंज, झाबुआ।

शहर के कॉलेज मार्ग स्थित प्राचीन जगदीश मंदिर पर प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी दीपावली पर्व के अगले दिन गौवधर्न-पूजा के अवसर पर महाआरती तथा महाप्रसादी का भव्य आयोजन किया गया। साथ ही राष्ट्रीय गौ-सेवा संघ जिला इकाई द्वारा मंदिर परिसर में गौ-माता की पूजन कर आरती की गई। उक्त आयोजन में विशेष रूप से सांसद गुमानसिंह डामोर तथा समाजसेवी अजय रामावत ने सहभागिता की।

मंदिर के सेवक जगदीश पंडा तथा सुशील पंडा ने बताया कि गौवधर्न-पूजा के अवसर पर देर शाम 7.30 बजे जगदीश मंदिर पर भगवान श्री जगन्नाथजी, भाई बलभद तथा बहन सुभद्राजी की प्रतिमा का विशेष श्रृंगार के साथ प्राचीन सिद्धी विनायकजी का भी श्रृंगार किया गया। मंदिर पर रंग-रोगन कर विद्युत सज्जा से जगमग किया गया। महाआरती में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद डामोर के साथ कल्याणपुरा मंडल प्रभारी भूरूभाई चौहान, पार्षद पपीष पानेरी, समाजसेवी अजय रामावत ने सम्मिलित होकर लाभ लिया। जिसके बाद मंदिर परिसर में महाप्रसादी का आयोजन रखा गया। भंडारा सभी भक्तजनों ने ग्रहण किया।

गौ-माता की पूजन कर आरती की

इस दौरान मंदिर परिसर में राष्ट्रीय गौ-सेवा संघ जिला इकाई झाबुआ की ओर से गौ-माता की पूजन कर आरती की गई। जिसमें आरजीएसएस के जिलाध्यक्ष राजेश चौहान, जिला पदाधिकारी रितेश शर्मा, सतीष लाखेरी, दौलत गोलानी, देवेन्द्र व्यास, योगिता पाठक के साथ मंदिर समिति से जुड़े वरिष्ठ अश्विन शर्मा, उमेश पांडे, रविराजसिंह राठौर, सुनिल चौहान, आईटी सेल के संयोजक अर्पित कटकानी, स्मृति भट्ट, रेखा शर्मा, कृष्णा गेहलोत आदि उपस्थित थे।

रजक समाज ने गौवधर्न-पूजा पर अन्नकूट का किया आयोजन

माही की गूंज, झाबुआ।

रजक समाज झाबुआ द्वारा शहर के लक्ष्मीबाई मार्ग में समाज की महिला इकाई की प्रदेश उपाध्यक्ष चेतना चौहान के निवास पर दीपावली पर्व के अगले दिन गौवधर्न पूजा पर अन्नकूट का आयोजन किया गया। जिसमें भगवान के सम्मुख छ्प्प्पन भोग लगाकर आरती कर प्रसादी वितरित की गई। प्रातरूकाल भगवान श्री कृष्ण तथा समाज के आराध्य देव संत श्री गाड़गे का सुंदर श्रृंगार तथा पट सजाकर उनके सम्मुख छप्पन भोग लगाया। बाद में श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार मंदिर के सेवक वरिष्ठ पं. प्रदीप भट्ट के मार्गदर्शन में भगवान की आरती कर भोग का प्रसाद सभी भक्तजनों को वितरित किया। इस अवसर पर समाज के युवा तथा बच्चें उपस्थित रहे।

15 अगस्त 2020 से पूर्व के सभी ऋण शून्य घोषित

माही की गूंज, खरगोन । मप्र शासन द्वारा प्रदेश में अनुसूचित जनजाति ऋण विमुक्ति अधिनियम 2020 लागू कर दिया गया है। 25 सितंबर 2020 को राज्यपाल के आदेशानुसार सचिव गोपाल श्रीवास्तव ने राजपत्र प्रकाशित कर दिया है। अनुसूचित जनजाति ऋण विमुक्ति अधिनियम 2020 के अंतर्गत अब 15 अगस्त 2020 से पूर्व के सभी ऐसे ऋण शून्य घोषित हो गए है, शासकीय ऋण को छोड़कर, जो किसी से भी लिए गए हो। अधिनियम में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि, ऋण में किसी लेनदार को देय, समस्त दायित्व, जो नगदी में हो वस्तु रूप में हो, प्रतिभूत हो या अप्रतिभूत हो और जो किसी सिविल न्यायालय की डिग्री या आदेश के अधीन या अन्यथा संज्ञेय हो तथा 15 अगस्त 2020 को अस्तित्व में हो, चाहे वे शोध्य हो गए हो या शोध्य न हुए हो। 15 अगस्त 2020 तक दिया गया प्रत्येक ऋण, जिसमें ब्याज की रकम यदि कोई हो, को भी शामिल किया गया है, जो अनुसूचित क्षेत्र में निवासरत हो, अनूसूचित जनजाति के सदस्य द्वारा किसी लेनदार को देय हो पूर्णतः उन्मोचित (ऋणमुक्त) हो जाएगा। अधिनियम में यह भी उल्लेख किया गया है कि, विनिर्दिष्ट किसी भी ऋणी द्वारा गिरवी रखी गई प्रत्येक संपत्ति ऐसे ऋणी के पक्ष में निर्मुक्त हो जाएगी। वहीं लेनदार इस बात के लिए आबद्ध होगा कि, वह उस ऋणी को वह संपत्ति तत्काल वापस कर दें। अपर कलेक्टर बीएस सोलंकी ने बताया कि, शासन द्वारा अधिनियम बन जाने के बाद से जिले के अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में वहां के नागरिकों की गिरवी रखी या ऋण को ऋणमुक्त कर दिया गया है। ऐसे नागरिक जिन्होंने अपनी रकम किसी देनदार के पास रखी हो, तो वे वापस ले सकेंगे। व्यापारी द्वारा नहीं देने की दिशा में संबंधित एसडीएम को इसकी सूचना देकर अपनी सामग्री ले सकते है या ऋण देने वाला व्यक्ति राशि या ब्याज के लिए दबाव बना रहा है, तो भी संबंधित एसडीएम को शिकायत कर सकते है।

पर्यटन में स्थानीय स्तर पर रोजगार के लिए कार्यशाला

माही की गूंज, खरगोन।

प्रदेश में पर्यटन और पुरातत्व स्थलों के जरिए आने वाले पर्यटकों को क्षेत्रीय अनुभव और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पर निर्मित कर आय बढ़ाने की दिशा में तीन महत्वपूर्ण योजनाएं लागू की गई है। मप्र टूरिज्म बोर्ड भोपाल द्वारा प्रदेश की संस्कृति के प्रचार-प्रसार और पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति तथा स्थानीय परिवेश का अनुभव कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम प्रारंभ हुआ है। इसके लिए क्षेत्रीय प्रबंधक मप्र राज्य पर्यटन विकास निगम इंदौर और जिला पुरातत्व एवं पर्यटन परिषद खरगोन द्वारा कार्यशाला आयोजित की जा रही है। आज महेश्वर स्थित नर्मदा रिट्रीट के सभाकक्ष में प्रातः 11 बजे से कार्यशाला आयोजित होगी, जिसमें बताया जाएगा कि, बेड एंड ब्रेकफास्ट, फार्म स्टे और ग्राम स्टे योजना के माध्यम से कैसे स्थानीय नागरिकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा सकते है और पर्यटकों को किस तरह स्थानीय संस्कृति व परिवेश का अनुभव कराया जा सकता है। जिला पंचायत सीईओ गौरव बेनल ने जानकारी देते हुए बताया कि, वर्तमान समय में कोरोना के प्रभाव के कारण होमस्टे की उपयोगिता और प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए होमस्टे संबंधी योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया जाना है।

पशुपालक लाभ उठा सकते है चलित संजीवनी चिकित्सा सुविधा का

माही की गूंज, बड़वानी। जिले के पशुपालक भी चलित संजीवनी चिकित्सा इकाई सुविधा का लाभ घर बैठे प्राप्त कर सकते है। इसके लिये उन्हें 1962 नम्बर पर डायल कर अपनी मांग या समस्या दर्ज करना होगा ।

उपसंचालक पशु चिकित्सा डॉ. एलएस बघेल से प्राप्त जानकारी अनुसार शासन ने पशुपालन विभाग के माध्यम से संजीवनी 1962 परियोजना, ग्रामीण क्षेत्र के पशु पालकों के लिये लागू की है। इसके माध्यम से पशुपालक घर पहुंच पशु चिकित्सा एवं कृत्रिम गर्भाधान सुविधा सशुल्क प्राप्त कर सकते है। उन्होने बताया कि पशुधन संजीवनी 1962 परियोजना अंतर्गत पशु उपचार का निर्धारित शुल्क लिया जायेगा। इसके लिये पशुपालक टोल फ्री नंबर 1962 प्रातः 8 बजे से सायंकाल 5 बजे तक लगाकर प्राप्त कर सकते है। यह सुविधा शासकीय अवकाश के दिनों में उपलब्ध नही होगी।

केबिनेट मंत्री एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने मुख्यमंत्री के संभावित कार्यक्रम के मददेनजर किया स्थल का निरीक्षण

माही की गूंज, बड़वानी।

प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चैहान के 27 नवम्बर को संभावित राजपुर में आयोजित जनजाति गौरव समारोह के समापन कार्यक्रम स्थल का प्रदेश के केबिनेट मंत्री प्रेमसिंह पटेल, राज्यसभा सांसद डॉ. सुमेरसिंह सोलंकी, भाजपा जिला अध्यक्ष ओम सोनी, कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा, पुलिस अधीक्षक निमिष अग्रवाल, जिला पंचायत सीईओ ऋतुराज सिंह, एसडीएम राजपुर अभयसिंह ओहरिया ने बुधवार को विभिन्न स्थलों पर पहुंचकर निरीक्षण किया। इस दौरान पूर्व सांसद सुभाष पटेल एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य अंतरसिंह पटेल सहित अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री के इस संभावित दौरे के मददेनजर जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने ग्राम उची, राजपुर नगर में स्थित दशहरा मैदान एवं कृषि उपज मण्डी परिसर पहुंचकर विभिन्न दृष्टिकोणो से इन स्थलों का निरीक्षण किया। इस दौरान प्रदेश के पशुपालन, सामाजिक न्याय एवं निःशक्तजन कल्याण मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने बताया कि, जनजाति गौरव समारोह के समापन कार्यक्रम में 4 जिले के जनजाति बन्धु भाग लेंगे। इसलिए हमें ऐसा स्थान का चयन करना चाहिए, जो खुला एवं विस्तृत हो। जिसके कारण सोशल डिस्टेंस के नियम का भी पालन सहजता से हो सके। इस पर जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने तय किया कि, इस दृष्टिकोण से उची ग्राम का विस्तृत मैदान उपयुक्त रहेगा। अतः मुख्यमंत्री का संभावित कार्यक्रम ही इसी स्थल को प्रस्तावित किया जाए।

एजुकेट गर्ल्स संस्था के पदाधिकारी कर रहे विद्यार्थियों एवं पालकों को जागरूक

माही की गूंज, बड़वानी।

विश्व व्यापी कोरोना महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों के दौरान भी विद्यार्थी नियमित शिक्षण गतिविधियों से जुढ़े रहे। इसके लिये एजुकेट गर्ल्स संस्था के पदाधिकारी '' हमारा घर, हमारा विद्यालय '' अभियान में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर शिक्षको, विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावको के साथ मिलकर अध्यापन को रूचिकर बनाने के लिये विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर रहे है। जिसके कारण विद्यार्थी घर पर ही रहकर हिन्दी एवं गणित विषयों का अध्ययन एवं पठन - पाठन सहजता से कर रहे है।

एजुकेट गर्ल्स संस्था के जिला प्रबंधक श्री विपिन बहादूर एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री देवेन्द्र चैहान से प्राप्त जानकारी अनुसार जिले के सभी विकासखण्डों के 417 ग्रामों में '' केम्प विद्या '' के माध्यम से विद्यार्थियों को खेल - खेल में मनोरंजक तरीके से अध्यापन कार्य करवाया जा रहा है। जिसमें विद्यार्थी एवं उनके पालकगण उत्साहपूर्वक भाग ले रहे है। उन्होने बताया कि इस कार्य में शिक्षक भी पूर्ण सहयोग दे रहे है, जिसके कारण ग्राम की स्कूल में दर्ज अधिकांश विद्यार्थी इस गतिविधि में सहभागिता कर रहे है।

संस्था की क्षेत्रीय समन्वयक सुश्री प्रमिता मोगरे एवं विकासखण्ड अधिकारी सुश्री कविता कनेल ने बताया कि विकासखण्ड बड़वानी के 48 ग्रामो में यह गतिविधियॉ नियमित रूप से की जा रही है, जिसके तहत गुरूवार को ग्राम आमलियापानी में केम्प लगाकर विद्यार्थियों के साथ मनोरंजक गतिविधियॉ की गई । उन्होने बताया कि संस्था की इन गतिविधियों के कारण ग्राम निर्वाचित जनप्रतिनिधियों में भी उत्सुकता बड़ी है, वे भी आगे आकर संस्था को सहयोग देकर अपने ग्राम के विद्यार्थियों को आगे लाने का प्रयास कर रहे है।

आंशिक दिव्यांगता होने पर भी अब दिव्यांगो को मिल जाया करेंगे हुबहू कृत्रिम अंग

माही की गूंज, बड़वानी।

बड़वानी जिले के आशाग्राम में सामाजिक न्याय विभाग द्वारा संचालित जिला दिव्यांग पुर्नवास केन्द्र के माध्यम से अब किसी घटना - दुर्घटना, जन्मजात अंग क्षति पहुंचने पर आई दिव्यांगता अथवा विकृति को दूर करने के लिये पीड़ित को हुबहू कृत्रिम अंग मिल जाया करेंगे। इसके लिये संस्था पीड़ित का नाप लेकर उनकी वांच्छित कम्पनी से इच्छित कृत्रिम अंग, नाम मात्र के शुल्क पर बनवाकर उपलब्ध करवायेगी। इससे पीड़ित व्यक्ति को इन कृत्रिम अंगो के नाप एवं ट्रायल के लिये बार - बार इन्दौर जाने की परेशानियों से भी निजात मिल जायेगी।

संस्था के सचिव डॉ. एसएन यादव से प्राप्त जानकारी अनुसार ऐसे दिव्यांग, जिनके जन्म से ही हाथ के पंजे अथवा अंगुलियों का विकास नही हुआ है। ऐसे युवा दिव्यांगजनों के कोमल ह्रदय को सदैव ठेस पहुंचता रहा है। जिसका मुख्य कारण स्थानीय स्तर पर लेटेस्ट टेक्निक के दिव्यांग उपयोगी कृत्रिम अंगों के निर्माण में आवश्यक संसाधनों की कमी एवं उच्च कोटि की मशीनरी का अभाव, मुख्य कारण रहा है। वे चाहकर भी दिव्यांगो को उनकी मांग अनुसार शरीर के मूल अंग जैसा सहयोगी अंग उपलब्ध कराने में परेशानियों का अनुभव करते थे। युवाओं की इस समस्या के मददेनजर अब संस्था कृत्रिम अंग निर्माण इकाई के माध्यम से सटीक मेजरमेंट करवा कर बड़ी कंपनियां जो उच्च क्वालिटी के हुबहू कृत्रिम अंग निर्माण करते हैं उन्हें आशा ग्राम के माध्यम से पहुंचाना आरंभ किया है। केंद्र पर आकर अब दिव्यांग अपना निशुल्क मेजरमेंट करवा कर यहीं से कंपनियों को अपना नाप भेजकर घर बैठे सटीक सहयोगी उपकरण प्राप्त कर सकते है।

एनएसपी पोर्टल पर आवेदन की तिथि बढ़ी

माही की गूंज, खरगोन। राष्ट्रीय मींस कम मेरिट योजना के लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर नवीन एवं नवीनीकरण के आवेदनों के रजिस्ट्रेशन एवं वेरीफिकेशन की तिथि कोविड-19 को देखते हुए बढ़ा दी है। इस संबंध में राज्य शिक्षा केंद्र के अपर संचालक ओएल मंडलोई ने समस्त जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयकों को पत्र जारी अवगत कराया है। उन्होंने कहा कि आवेदन की अंतिम तिथि 30 नवंबर, स्कूल स्तर पर वेरीफिकेशन की अंतिम तिथि 15 दिसंबर तथा जिला स्तर पर वेरीफिकेशन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर रहेगी।

अध्यात्म पुरोधा पुज्य श्री जवाहराचार्य

आचार्य जी की 145 वीं जयंति पर विशेष

माही की गूंज, थांदला। इन्दिरा कवाड

अध्यात्मि जगत के पुरोधा महान विभूमि युग सृष्टाप-युगदृष्टाम श्री पूज्य जवाहराचार्य तेजस्वीध व्यक्तित्व ओजस्वी वाणी व प्रखर साधना के धनी थे, आपका जन्म मालवा माटी के थांदला मे कार्तिक शुक्लि चतुर्थी संवत 1932 को हुआ था।

कवाड परिवार अपने को भाग्यंशाली मानते है कि, हमारे प्रपितामह जीवराजजी एंव सौभाग्यवती नाथीबाई के तेजस्वी पुत्र जवाहर को जन्म देना। एक चमकता आभा मण्डल, गौरवर्ण, विशाल भाल, पारदर्शी नयन कमल, शिशु की बाल मुस्कान देखकर माता-पिता धन्य हो गए थे। उनके संस्कारी गुणो के पावन उपवन की छांव में शैशव पल्लवित हुआ।

हमारे पितामह व अन्य बडो के श्रीमुख से जवाहर के बचपन से बड़े होने तक की बाते सुनी है। जहां जिस घर मे हम रहते है वहां उनका जन्म किस जगह हुआ, उनका पालन पोषण, बाल्यकाल मे माता-पिता को खो देना, शिक्षा मामा श्री मूलचन्द्रजी धोका के पास मे रहकर विघार्थी जीवन मे अपूर्व आत्मबल साहस को संजोना जैसे, कई प्रसंग बातो-बातो मे उद्घाटीत हो जाते है। वही क्रम आज भी हमारे परिवार मे उपस्थित है, इसलिए युवाओं एवं बालमन मे भी पूज्यवर जवाहर की उर्जास्वित, सौम्य एंव दीप्त किरण की बारीक सी छवि उनके व्यक्तित्व मे लहलहाती नजर आ ही जाती है। आत्म शोधन की आध्यात्मिक प्रक्रिया मे तराशा गया नायाब जवाहर उनका सच्ची भावक-सहोदरसा सिद्ध होने लगता है। एक रहनुमा सा प्रबल व्यक्तिव आसपास खुशनुमा माहौल रच देता है।

मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के थांदला की माटी के इस सपूत ने वैराग्यस, कठिन परीक्षा के बाद दीक्षा की अनुमति, मुनि जीवन मे आने वाले उपसर्ग, शरीर मे असाता वेदनीय का उदय समभाव से सहन करना उनके उत्कृष्टि भाव को निरन्तर निखारता है। उत्तम व्याख्यान शैली, कई प्रेरणास्पद और आगम पुस्तको का लेखन, आगमोक्तम सारपूर्ण विवेचन हमे आज भी चमत्कृत करता है, कितना विशद अध्यसाय वैचारिक उपलब्धियों के साथ आज भी सत्यम-शिवम-सुन्दरम का संसार रच देता है।

नैतिक ब्रम्हचार्य के रथ पर, सत्य के ध्वज को लेकर, अहिंसा के परमधर्म को अपनी आत्मा मे स्थापित कर, आचार्य एंव अपधरिग्रह के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने वाले महामुनी को शत-शत नमन है।

जैनाकाश के गगन मंडल मे 'जवाहर' वह सूर्य-मणि है जो जीवन के अंधेरे को दूर कर उसे आलोक प्रदान करता है। वे शिक्षण सस्थाओ अध्यात्म के क्षेत्र मे ज्ञानार्जन, समाजपयोगी अनेक प्रवृतियों के प्रेरक रहे है। लोगों के हृदय पर करूणामय आभा से शासन करने वाले, अजातशत्रु की तरह जीने वाले, भगवान महावीर के मार्ग पर चलने वाले, इस आत्मरथी मे आर्चाय परम्परा का एक चैतन्य,मय नक्षत्र विराजित था। इसलिए वे आर्चाय रत्नों मे सर्वोत्तम दीप्ति वाले एक अद्वितीय रत्न थे।

जैन शास्त्रो मे गंभीरता से अध्ययन करने से जैसे, जैन धर्म की स्वाति नक्षत्र की बूंद जब किसी श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी के मन की सीपी मे निर्झरित होती है, तब कही वह मोती बनती है यह आकाश की देन है। परन्तु जब कोई कोयला धरती के गर्भ मे सहस्त्रो वर्षतप करता है, जब उसकी सारी श्यामलता, कालिमा निर्मूल हो जाती है, तब कहीं आदिवासी अंचल मे शोध के पश्चात जवाहर का अभ्युतदय होता है।

थांदला के इस हीरे को तराशना और उसे किसी महान परम्परा मे दीक्षित कर राष्ट्रधर्मी का रूप देना परम्परा तथा संस्कारो का ही परिणाम है।

हमारा देश, जब स्वतंत्र देश के लिए क्रांति का आगाज कर रहा था, भारतीय समाज मे गांधी, तिलक, मदन मोहन मालवीय, लौह पुरूष श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने जवाहराचार्यजी मे इस महान राष्ट्र की आत्मा की छवि के दर्शन किए। इसलिए जवाहराचार्य का विहार..उनका चार्तुमास, उनका प्रवचन, उनके उपदेश, भारत की आत्मा को आलोकित करने जैसा था। इसलिए वे अपने युग के राष्ट्राचार्य थे। उनके पदचाप पर सम्पुर्ण राष्ट्र, शंखनाद कर अंगडाई लेता था, जिनके वस्त्रो से, पहनावे से, खादी के धागे से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को संबल मिलता रहा, जिनकी वाणी से वर्णभेद का विष सहज ही मधु संस्कृति मे परिणित हो गया। जहां वे थम गए वहीं तीर्थ बन गया, तीर्थ हमारे जैन शस्त्रो का पारिभाषिक शब्द है। वह आत्मसोधन की आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसमे युद्ध-संघर्ष-विषमता- शांति, सुख-समता मे परिणत हो जाती है।

आषाढ शुल्क अष्टमी 10 जुलाई 1943 को पूज्य श्री ने स्वर्ग की और प्रयाण कर दिया। उस समय मुख मण्डल पर दिव्य शांति विराज रही थी, सभी से क्षमायाचना कर प्रायश्चित लिया, संधारा ग्रहण कर आत्मशुद्धि की।

जिन भाग्यशालीयों ने पूज्य श्री की अंतिम समय की छबि देखी, उनके नेत्रो मे सदा के लिए समा गई। कितनी सौम्यता, कितनी भव्यता, कैसी समाधि और अश्रुधारा के साथ उस दिव्य् आत्मा. के प्रति श्रद्धांजलि।

कवाड परिवार उनकी समता, तप, साधना, ज्ञान, आराधना उस युग की अनुपम विभुति, साहित्य की जवाहर किरणावलीयों मे प्रकाशित उनके अध्यात्मत लेखन को प्रणाम-वंदन करता है।

खाद्य सामग्री की जांच कर सैम्पल लिए

एक्सपायरी खाद्य सामग्री की विनिष्टिकरण की कार्वाई की

दुकानों पर खाद्य सामग्री की जांच करते हुए राजस्व एंव खाद्य विभाग के अधिकारीगण।

माही की गूंज, अलीराजपुर।

कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्रीमती सुरभि गुप्ता के निर्देश पर राजस्व अमले, खाद्य विभाग के अधिकारियों ने खाद्य पदार्थों में मिलावट मुक्ति अभियान के तहत जोबट में विभिन्न खाद्यान्न, मिठाई दुकानों आदि पर जांच कर कार्रवाई की गई। इस दौरान दुकानदारों को एक्सायरी, दूषित, मिलावटी एवं अमानक स्तर की खाद्य सामग्री अथवा कोल्डीक्स का विक्रय नहीं करने के लिए दिशा निर्देश दिए। साथ ही दुकानों से एक्सपायरी, अमानक स्तर की एक्सपायरी खाद्य सामग्री जप्त करते हुए विनिष्टिकरण की कार्यवाही की गई। उल्लेखनीय है कि, कलेक्टर श्रीमती गुप्ता के मार्गदर्शन में जिलेभर में खाद्य पदार्थों में मिलावट मुक्ति अभियान के तहत अमानक स्तर की खाद्य सामग्री जप्ति तथा विनिष्टीकरण की कार्रवाई की जा रही है। साथ ही दुकानदारों को समझाईश भी दी जा रही है कि, साफ ताजा और मिलावट मुक्त खाद्य सामग्री का विक्रय करें। मावा, दुग्ध, मिठाईयां, नमकीन, सहित अन्य खाद्य पदार्थों आदि की शुद्धता एवं गुणवत्ता सुनिचित हो इसके लिए प्राशासन द्वारा सघन जांच अभियान चलाया जा रहा है। बाजार में दूषित, मिलावटी एवं अमानक स्तर की खाद्य सामग्री अथवा कोल्ड्रींक्स का विक्रय ना हो यह भी सुनिचित कराया जा रहा है। राजस्व, खाद्य विभाग, पुलिस विभाग की संयुक्त टीमें बाजार में दुकानों पर सघन जांच करते हुए शुद्ध और ताजी खाद्य सामग्री का विक्रय हो यह सुनिचित करा रही है। खाद्य विभाग द्वारा मिठाईयों एवं अन्य खाद्य सामग्री के सेम्पल लेने की कार्रवाई भी की जा रही है। निरीक्षण के दौरान तहसीलदार निर्भयसिंह पटेल, खाद्य निरीक्षण जादौन एवं अन्य राजस्व, खाद्य एवं पुलिस विभाग के कर्मचारीगण उपस्थित थे।

ग्राम स्तरीय सतर्कता दल करेंगे उचित मूल्य दुकानों की मानिटरिंग

समय सीमा में पत्रों की करे समीक्षा कलेक्टर ने दिए निर्देश

माही की गूंज, रतलाम।

जिले में उचित मूल्य दुकानों पर गड़बड़ी को रोकने के लिए ग्राम स्तरीय सतर्कता समितियां मॉनिटरिंग करेंगी। कलेक्टर गोपालचंद्र डाड ने समय सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में निर्देश दिए कि, ग्राम स्तरीय सतर्कता एवं मानिटरिंग समितियों को सक्रिय किया जाए। सतर्कता समिति में सम्मिलित ग्राम पंचायत सचिव, पीडीएस दुकानदार के संपर्क में रहेगा। खासतौर पर जब राशन सामग्री दुकान पर आएगी तब सचिव जानकारी लेगा, समिति दुकान पर पहुंचकर सामग्री उतरने के समय मानिटरिंग करेगी। कलेक्टर ने जिले में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत पात्र व्यक्तियों को पात्रता पर्ची उपलब्ध कराने की समीक्षा करते हुए जिला खाद्य अधिकारी को निर्देशित किया कि, नवीन जोड़े गए सभी पात्र व्यक्तियों को पात्रता पर्ची मिल जाए, राशन के मामले में कोई भी गड़बड़ी पर सख्त कार्रवाई की जाएगी, यह प्रदेश की मुख्यमंत्री की सर्वोच्च प्राथमिकता में सम्मिलित है। गड़बड़ी करने वालों के विरुद्ध रासुका लगाया जाएगा। राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए कि, वे जब भी भ्रमण पर जाएं तो उचित मूल्य की दुकान का अनिवार्य रूप से निरीक्षण करें। बैठक में कलेक्टर द्वारा सभी विभागों के कार्यालय प्रमुखों को निर्देशित किया गया कि, उनके कार्यालय अंतर्गत अनुपयोगी संपत्तियों को लोक परिसंपत्ति प्रबंधन पोर्टल पर अनिवार्य रूप से इन्द्राज कराएं। इस संबंध में

कार्यालय प्रमुख लिखित रूप से सूचित करें कि उनके कार्यालय में अनुपयोगी संपत्ति है अथवा नहीं। मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के संबंध में कलेक्टर ने कहा कि, योजना के क्रियान्वयन में जिला, प्रदेश में तीसरे स्थान पर है, अधिकारी थोड़ी और मेहनत करें तो जिला प्रदेश में अव्वल आ जाएगा।

कलेक्टर द्वारा जिले में मुख्यमंत्री के सर्वोच्च प्राथमिकता में सम्मिलित कार्यक्रमों की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया गया कि, खाद्य सामग्री में मिलावट के विरुद्ध सघन अभियान संचालित किया जाए। अपर कलेक्टर को निर्देशित किया कि, इस संबंध में दलों का गठन करें, जिले भर में प्रतिष्ठानों का निरीक्षण सघन रूप से किया जाए। पिछड़ा वर्ग विभाग की समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने निर्देश दिए कि अधिकारी नहीं होने की स्थिति में जिले में पदस्थ विभाग के निरीक्षक अनिवार्य रूप से समय सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में उपस्थित होंगे। मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में लंबित शिकायतों की समीक्षा के दौरान कलेक्टर द्वारा निर्देशित किया गया कि, सभी विभाग 100 दिवस से अधिक लंबित शिकायतों का निराकरण तेजी से करें।

गाय-गोहरी का हुआ आयोजन, मन्नतधारियों के उपर से गुजरी दर्जनों गाय, वर्षों पुरानी परंपरा का हो रहा निर्वहन

माही की गूंज, पेटलावद।

देशभर में प्रसिद्ध झाबुआ की गाय गोहरी परंपरा का निर्वहन 15 अक्टूबर को पड़वा पर किया गया, इस दृश्य को देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़ते हैं। गाय-गोहरी पर्व का पेटलावद शहर सहित क्षेत्र में कई जगह अनोखा आयोजन किया जाता है। शहर में सुबह और शाम दो बार स्थानीय मुक्तिधाम पर मन्नतधारियों के ऊपर से गाय गुजरवा कर गाय-गोहरी का पर्व मनाया गया। पेटलावद क्षेत्र के बाछीखेड़ा सहित कई ग्रामों में गाय गोहरी का यह आयोजन किया गया।

आदिवासी अंचल में हर साल दिवाली के दो दिन बाद गाय गोहरी पर्व मनाया जाता हैं, इस पारंपरिक अनुष्ठान को मनाने का अलग ही तरीका है। पर्व को मनाने के लिए मन्?नतधारी सडक पर लेट जाते हैं और गायों को अपने ऊपर दौड़ाते हैं। भारत में गाय को मां के समान माना जाता है और पूजा की जाती है, लेकिन झाबुआ जिले में मनाया जाने वाला वार्षिक उत्सव गाय-गोहरी के जैसा शायद ही कोई हो। यह त्योहार हर साल दीपावली के ठीक बाद मनाया जाता है, इस दिन को हिंदू नववर्ष के रूप में भी माना जाता है। पुरातन मान्यता के मुताबिक, लोगों के ऊपर से गायों का काफिला गुजरता है। कहा जाता है कि, यह पर्व गाय और ग्वाला के रिश्तों के इजहार का पर्व है। यही कारण है कि, ग्वाला गायों को अपने ऊपर से गुजारते हैं। गाय के पैरों को शुभ माना जाता है, इसलिए पारंपरिक रीति-रीवाजों के अनुसार नीचे लेटकर गाय के पैर को अपने शरीर पर रखवाते हैं। यह परंपरा आज भी उसी तरह निभाई जा रही है, कुछ वर्ष पहले तक गाय गोहरी के दिन एक-दूसरे पर फटाखे चलाते थे और परिक्रमा के दौरान ग्रामीण और युवा आमने-सामने से एक दूसरे पर फटाखे फेंकते थे।

पेचवर्क के अभाव में जगह-जगह गड्ढे में तब्दील होता दिख रहा है रोड़

माही की गूंज, जामली। जितेंद राठौर

प्रधानमंत्री सड़क पर जगह-जगह हो रहे गढ्डों से राहगीर परेशान हो रहे है, समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो कहीं बड़ी दुर्घटना न हो जाए। इन दिनों रायपुरिया-जामली के बीच माही नहर ओर भैरूघाट के दोनों जगह पर रोड उखड़ जाने से राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। यह वोही रोड़ है जो गुजरात से उज्जैन जाने वाले राहगीरों के लिए सीधा मार्ग है, लेकिन भारी वाहनों कि आवा-जाही के कारण इस मार्ग के फोटो ही बया कर रहे है कि किस तरह से राहगीर अपनी जान जोखिम में डालकर सफर करने को मजबूर है। इन गढ्डों की वजह से कई बार दुर्घटना भी घठित हो चुकी है, क्योकि रोड़ पर जगह-जगह हो रहे गड्ढों से रात में सफर करना जान लेवा साबित हो सकता है। जगह-जगह उखड़ रहे रोड़ के कारण बहुत बार तो सामने से आ रहे वाहन कि, तेज रोशनी से दो पहिया वाहन चालको को गढ्डों में गिरने का भय रहता है। इस रोड़ को लेकर माही कि गूंज द्वारा पहले भी समाचार प्रकाशित किया गया था, लेकिन जिम्मेदार जान कर भी अंजान बन इस ओर ध्यान नही दिया जा रहा है।

पुनित सकलेचा ने बनाई मनमोहक रांगोली

माही की गूंज, झाबुआ। स्थानीय राधा-कृष्ण मार्ग निवासी युवा पुनित संजय सकलेचा ने दीपावली पर्व पर सुंदर तथा मनमोहक रांगोली बनाकर संदेश दिया है कि मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम तथा रावण में भारतीय सेना और पुलिस श्री राम का राज्याभिषेक कर स्वागत कर रहीं है। वहीं रावण का तीर चलाकर अंत कर रही है। डॉक्टर और नर्सेस कोरोना यौद्धा बनकर लोगों की जान बचा रहे है। पुनित सकलेचा ने बताया कि उन्होंने 8 बाय 8 फिट की यह रांगोली करीब 6 घंटे में तैयार की है। वह प्रतिवर्ष दीपावली पर रांगोली बनाकर कोई ना कोई अनूठा संदेश देते है। इस बार अपनी रांगोली में कोरोना पर योद्धाओं की विजयादशमी और विश्व शांति के लिए दीप उत्सव मनाना दर्शाया गया। रांगोली में एक मुख और दो चेहरे दर्शाए गए हैं। जिसमें एक श्री राम और एक रावण। श्री राम का राज्याभिषेक और रावण का अंत करते दिखाया गया है। साथ ही इसमें दिपावली की खुशियों के रंग भरकर स्लोगन भी लिखे गए है।

उत्साह के साथ मना धनतेरस, दीपावली व भाईदूज का त्यौहार

माही की गूंज, सारंगी। संजय उपाध्याय

दीपावली का त्यौहार नगर में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, लोगों में काफी उत्साह और उमंग था, पुलिस प्रशासन भी मुस्तैद रहा। पुलिस प्रशासन की सतर्कता के कारण नगर में धनतेरस, दीपावली, भाईदूज का त्योहार उत्साह के साथ मनाया गया, पूरा नगर झिलमिल लाइटों से एवं दीपक की रोशनी से जगमगा उठा। कोरोना संक्रमण के कारण लगातार जनता और व्यापारियों में मायूसी दिखाई दे रही थी, इसी बीच प्रशासन के द्वारा बाजार खुलने की छूट देने पर जनता में खुशी थी। व्यापारियों व किसानों के चेहरों पर रौनक लौटने लगी, धनतेरस एवं दीपावली पर जमकर खरीदारी हुई। दीपावली के दूसरे दिन लोगों ने एक दूसरे को दीपावली एवं नववर्ष की शुभकामनाएं दी, भाईदूज पर भी बाजार में रोनक रही, बहन ने अपने भाई को तिलक लगाकर भाईदूज का त्यौहार मनाया।

ग्राम पंचायत सचिव तत्काल प्रभाव से निलंबित

माही की गूंज, झाबुआ। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सिद्धार्थ जैन ने जनपद पंचायत राणापुर की ग्राम पंचायत धामनीचमना के सचिव ओमकारसिंह मेड़ा को अपने कर्तव्य के प्रति लापरवाही तथा उदासिन्ता बरतने, ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के अंतर्गत ग्रामीण जनों को लाभान्वित नहीं करने, वरिष्ठ कार्यालय के निर्देशों की अवहेलना करने पर तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाकर विभागीय जांच संस्थित की है। निलंबन अवधि में मेड़ा का मुख्यालय जनपद पंचायत राणापुर रहेगा तथा इन्हें नियमानुसार निलंबन भत्ते की पात्रता अर्जित रहेगी।

कलेक्टर ने वीडियो कांफ्रेंसिंग से ग्राम पंचायत के सरपंचो व आमजन से चर्चाकर जानी समस्या

माही की गूंज, शाजापुर।

कलेक्टर दिनेश जैन ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए जिले की जनपद पंचायत शाजापुर की ग्राम पंचायत मालीखेड़ी, तिलावद गोविन्द एवं सेतखेड़ी, जनपद पंचायत मो. बड़ोदिया की ग्राम पंचायत सारसी, मण्डोदा एवं डोकरगांव, जनपद पंचायत कालापीपल की ग्राम पंचायत सेमलिया, पारदाखेड़ी एवं बड़बेली तथा जनपद पंचायत शुजालपुर की ग्राम पंचायत मोरटाकेवड़ी, टपका बसंतपुर तथा टीटवास इस प्रकार कुल 12 ग्राम पंचायतों के सरपंचो सहित आमजनों से चर्चा कर ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं की जानकारी ली। वीडियो कांफ्रेंसिंग में शामिल ग्राम तिलावद गोविन्द सरपंच ने पीने की पानी की समस्या से अवगत कराया। कलेक्टर ने महिला सरपंच से कहा कि, आंगनवाड़ी केंद्रों का निरीक्षण कर देखें कि बच्चों को पोषण आहार का वितरण और टीकाकरण हो रहा है कि नहीं, तथा सभी बालिकाओं के नाम दर्ज हैं की नहीं यह भी देखें। सेमलिया सरपंच ने बताया कि, भैसायगढ़ा सोसायटी से खाद प्राप्त करने में दिक्कत आ रही है, श्मशान में जाने का रास्ता नहीं है और अनुसूचित जाति बस्ती में विद्युत ट्रांसफार्मर खराब है, आयुष विभाग का अस्पताल क्षतिग्रस्त है तथा कपिलधारा कूप की राशि नहीं मिली है। बड़बेली सरपंच ने बताया कि, उनके ग्राम में बीमे की राशि कम मिली है, हैण्डपंप मैकेनिक नहीं आ रहे हैं। डोकरगांव सरपंच ने बताया कि, विद्युत ट्रांसफार्मर पर ज्यादा लोड होने से विद्युत सप्लाई में अवरोध हो रहा है। सेतखेड़ी सरपंच ने बताया कि, ग्राम में पानी की समस्या है। शेड निर्माण की राशि अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। बेरछा से खेड़ा तक का सड़क मार्ग अतिक्रमण के कारण नहीं बन पा रहा है, नलकूप खनन के पश्चात उसमें हैंडपंप नहीं लगाया गया। पारदाखेड़ी सरपंच ने बताया कि उपस्वास्थ्य केन्द्र भवन निर्माण का कार्य अब तक शुरू नहीं हुआ है। प्रायमरी स्कूल का भवन एवं स्टॉप डेम क्षतिग्रस्त है और बिजली के खंबे भी झुके हुए हैं। मंडोदा सरपंच ने बताया कि ग्राम की सड़क जर्जर है, रास्ते पर अतिक्रमण है, विद्यालय तक पहुंचने के लिए एक पुलिया की आवश्यकता है और अनुसूचित जाति मोहल्ले के उपर से बिजल के तार नीचे झूल रहें हैं, इससे कभी भी खतरा हो सकता है। गांव के दो

व्यक्तियों की खाद्यान्न पर्ची नहीं निकली है। मोरटाकेवड़ी सरपंच ने अतिक्रमण की समस्या से अवगत कराया। साथ ही आबादी के लिए भूमि प्रदान करने के लिए कहा। इसी तरह ग्राम पंचायत सारसी, टीटवास, टपका बसंतपुर एवं मालीखेड़ी सरपंचो ने भी समस्याओं से अवगत कराया।

समस्याओं को सुनकर कलेक्टर ने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारी को ग्रामों में हैण्डपंप मैकेनिकों को भेजने तथा इसके लिए कैलेंडर तैयार करने के निर्देश दिए। मनरेगा की राशि नहीं मिलने के संबंध में कलेक्टर ने परियोजना अधिकारी आरपी भारती को राशि प्रदाय की कार्वाई करने के निर्देश दिए। खाद्यान्न पर्ची के नहीं मिलने की शिकायत का निराकरण करने के लिए कलेक्टर ने खाद्य विभाग के अधिकारी को तथा अतिक्रमण की समस्या का हल करने के लिए संबंधित तहसीलदारों को निर्देशित किया। कलेक्टर ने कहा कि, ग्राम पंचायतों से मिलने वाली शिकायतो का त्वरित निराकरण किया जाएगा। कलेक्टर ने सरपंचो से कहा कि, कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए सुरक्षात्मक उपाय अपनाने के लिए ग्रामीणों को सतत् प्रेरित करते रहें। कलेक्टर ने ग्रामों की पेयजल समस्या, आंगनवाड़ियों द्वारा सूखा खाद्यान्न वितरित करने, उचित मूल्य की दुकानों से खाद्यान्न प्राप्त होने, पशुओं के बीमा आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर सभी ग्राम पंचायतों के सरपंचो ने पेयजल, सड़क, बीमा क्लेम नहीं मिलने, ट्रांसफार्मर की आवश्यकता आदि के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर पीएचई से सुश्री रश्मि शर्मा, कार्यपालन यंत्री विद्युत एसएन मरकाम एवं जिला पंचायत से आरपी भारती एवं आनंद राघव तिवारी भी उपस्थित थे। ई-गवर्नेन्स सहायक मैनेजर सुश्री तंजीला खान ने वीडियो कांफ्रेंसिंग की व्यवस्था की।

सोते व्यक्ति को जिन्दा जलाने की कोशिश,दूसरे शख्स ने बचाया

माही की गूंज , रतलाम।

गहरी नींद में सो रहे एक व्यक्ति को बीती रात एक मानसिक विक्षिप्त ने जिन्दा जलाने का प्रयास किया। सोता हुआ व्यक्ति भाग्यशाली था कि, उसे एक अन्य मानसिक विक्षिप्त ने वहां पंहुचकर नींद से जगा दिया और उसकी जान बच गई। ये पूरा वाकया सीसीटीवी में कैद हो गया, घटना बीती रात करीब डेढ बजे की है। पोलो ग्राउण्ड के बाहर चाय की गुमटी पर चौकीदारी करने वाला मोहन पंवार 25 गहरी नींद में सो रहा था कि, इसी इलाके में भटकते रहने वाला एक पागल वहां पंहुचा। उसने बडे धीरे से सोते हुए मोहन के तकिये में आग लगा दी। कुछ ही क्षणों में आग भडक उठी और लपटें उठने लगी, लेकिन गहरी नींद में सोए मोहन की नींद नहीं खुली। वह भाग्यशाली रहा कि उसी वक्त एक अन्य मानसिक विक्षिप्त ने वहां पंहुच कर उसे नींद से जगा दिया, जिससे उसकी नींद खुल गई और वह बच गया। देवदूत बनकर आया यह विक्षिप्त आमतौर पर उस चाय की दुकान पर आता रहता है और रात भर इधर-उधर भटकता रहता है। उसे लोग मालपानी कहकर बुलाते है। यह पूरी घटना दो अलग-अलग सीसीटीवी कैमरों मे रिकार्ड हो गई। बाद में जब पुलिस को इस घटना की जानकारी मिली तो पुलिस ने आग लगाने वाले को खोज निकाला, लेकिन वह मानसिक तौर पर विक्षिप्त निकला और इस वजह से कोई कार्रवाई नहीं की गई।

दीपावली की छुट्टी बीताने अपने घर जा रहे सीआरपीएफ जवान की ट्रेन से गिरने पर मौत

आरोपः बगैर पोस्टमार्टम के शव दफनाया, परिवार के आने के बाद फिर से बाहर निकाला

माही की गूंज, रतलाम। राघवेंद्र सिंह शेखावत

मुंबई-दिल्ली रेल मार्ग पर थूरिया (रतलाम) रेलवे स्टेशन के समीप रेलवे पटरी के पास मृत मिले युवक की शिनाख्त केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) 205 बटालियन के कोबरा रेजीमेंट कमांडो अजीतसिंह पिता झग्गुभाई परमार (26) निवासी ग्राम कोड़ीनार जिला गिर सोमनाथ (गुजरात) के रूप में हुई है। हादसे के बाद शिनाख्त नहीं होने पर आलोट में पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव दफना दिया था। जानकारी मिलने पर पहुंचे परिवार ने आरोप लगाया कि, पुलिस ने बिना पोस्टमार्टम व शिनाख्ती के प्रयास किए बगैर ही जल्दबाजी कर शव दफना दिया।

आलोट थाना प्रभारी दीपक शेजवार ने बताया कि, 14 नवंबर सुबह थूरिया रेलवे स्टेशन से आगे अंडर ब्रिज के पास युवक का शव मिला था, प्रारंभिक जांच में उसकी मौत राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन से गिरने से होना पाई गई, 18 से 20 घंटे तक उसकी शिनाख्त के प्रयास किए गए थे, आलोट में शव रखने के लिए फ्रीजर नहीं होने व शिनाख्त नहीं होने पर शव सुरक्षित करते हुए दफनाया गया था। ट्रेन के मुंबई पहुंचने पर मृतक की ट्रेन की सीट पर मिले मोबाइल फोन व बैग से मुंबई आरपीएफ ने जांच कर जानकारी दी तो उसकी शिनाख्त अजीतसिंह परमार के रूप में हुई। सोमवार को उसके काका सामत परमार, मामा भरत, चचेरा भाई विपिन परमार, संदीपसिंह वाड़ा आदि पहुंचे।

जवान को दफनाते हुए प्रशासनिक अमला।

जवान के पिता ने दिया शव प्राप्त करने के लिए आवेदन

जवान के पिता सामत परमार ने शव प्राप्ति के लिए आवेदन दिया, इसके बाद नियमानुसार शव जमीन से निकलवाकर जिला अस्पताल भिजवाया गया। डॉ. अब्दुल कादर का कहना है कि, पुलिस शव पोस्टमार्टम कराने लाई थी, सिर व हाथ में चोट दिखाई दे रही थी, इसलिए चीरा नहीं लगाया गया, पोस्टमार्टम रिपोर्ट सौंप दी है, शरीर पर कट के निशान नहीं थे, शिनाख्त के लिए इंतजार करना था।

रिश्तेदार संदीपसिंह वाड़ा ने मीडिया को बताया कि, अजीतसिंह 2017 में सीआरपीएफ में भर्ती हुआ था, गया (बिहार) में पदस्थ था, एक माह की छुट्टी पर वह 13 नवंबर की शाम दिल्ली से राजधानी ट्रेन में सवार होकर बड़ोदरा आ रहा था, 14 नवंबर को मुंबई आरपीएफ से पता चला कि वह आलोट(रतलाम) के पास ट्रेन से गिर गया है, इसके बाद आलोट पुलिस से बात की और सोमवार आलोट पहुंचे।

करणी सेना ने लगाया लापरवाही का आरोप, की जांच की मांग

शव को 72 घण्टों तक सुरक्षित रखते है, क्या कारण है कि, शव का पोस्टमार्टम भी नही किया और 18 घण्टों के अंदर ही शव को दफना दिया।

परिवार के आवेदन के बाद शव बाहर निकालते हुए।

मगलवार को करणी सेना ने एसपी को ज्ञापन सौपकर मृत्यु का कारण स्पष्ट करने ओर घटना की किसी उच्च अधिकारी से जांच की मांग की।

जवान अमितसिंह

दीपावली के अगले दिन मनाया गया गाय-गोरी पर्व

माही की गूंज, अलीराजपुर।

माली समाज द्वारा प्रतिवर्ष परम्परानुसार इस वर्ष भी गाय-गौरी एवं पड़वा का पर्व रविवार को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। माली धर्मशाला से डीजे के साथ समाजन नाचते-झूमते व गौरी माता की जय करे लगाते हुए आगे बढ़ें, राष्ट्रीय पुले ब्रिगेड जिला मीडिया प्रभारी संजय गेहलोद माली ने बताया कि, माली समाजजनों के द्वारा माली समाज धर्मशाला से गाय माता को तैयार कर परिवार की महिला द्वारा गाय माता के पैर छू कर एवं गाय माता की पूजा अर्चना कर गायों को पटाखों से भड़काते हुए माली समाज धर्मशाला से प्रमुख मार्ग, मस्जिद मोहल्ला, बस स्टैंड, निम चौक पर मत्रतधारी परम्परा अनुसार भक्तो के ऊपर से गाय माता को निकाला गया।

कहा जाता है कि, जो कोई मन्नत लेता है उस का हर काम सफल होता जिससे मन्नतधारी को जमीन पर लेटाया जाता है जिनके ऊपर से गाय माता निकलती है फिर मन्नतधारी को समाजजन गले लगाकर बधाई देते है पुनः पटाखों से भड़काते हुए माली धर्मशाला में लाया गया, जहा पर गाय को पानी पिलाया गया व शोभायात्रा का समापन सौरवा नाका पर किया गया, तत्पश्चात सभी समाजजन अपने अपने घरों की ओर जाकर गोवर्धन की पूजा करते है। इस आयोजन को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते है उक कार्यक्रम में माली समाज अध्यक्ष मधु मोहन माली, उपाध्यक्ष रामलाल माली, माली समाज मुख्या रतनलाल माली, शांतिलाल माली, हिम्मतलाल माली, अरविंद माली, स्वामीनारायन माली, सन्तोष माली, प्रितेश माली, गौरव माली, रामनारायण माली, अनिल माली, संदीप माली, ओमेश माली, जितेंद्र माली, सुनील माली, समस्त माली समाजजन उपस्थित थे जिसका आभार शांतिलाल माली ने माना।

एसडीएम ने किया प्रा.स्वास्थ्य केंद्र का निरिक्षण, अस्पताल की व्यवस्था को लेकर जाहिर की नाराजगी

माही की गूंज, रावपुरिया। उमाशंकर पाटीदार

गत दिनों पेटलावद अनुविभागीय अधिकारी शिशिर गेमावत ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रायपुरिया का औचक निरीक्षण किया, जिसमें उन्होंने भर्ती मरीजों के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली, उसके बाद ओपीडी रजिस्टर देखा वही कोरना किट के बारे में जानकारी ली गई उन्होंने चिकित्सकों से पूछा कि, कहां पर है कोरना किट तो कोई भी संतुष्टि से जवाब नहीं दे सका। अनुविभागीय अधिकारी निरीक्षण करने पहुंचे, इस दौरान तहसीलदार जितेंद्र अलावा, बीएमओ एमएल चोपड़ा, राजस्व निरीक्षक रामसिंह मचार आदि अधिकारी मौजूद थे। कुछ कमिया होने पर उन्हें पूरी करने की बात की

गई। अस्पताल की बाउंड्री तार फेंसिंग जर्जर हो गई है। आसपास के रहवासियों ने अस्पताल परिसर से आम रास्ता बना लिया लेकिन विभाग इस ओर ध्यान नहीं दे रहा है, अस्पताल की जमीन अतिक्रमण की भेंट ना चढ जाए इसलिए प्रशासन को इस ओर ध्यान देकर कार्य करना चाहिए की बात गांव के गणमान्य लोगो ने गूंज को कही।

ट्रेक्टर व यात्री बस की हुई भिड़ंत, बस चालक सहित यात्री घायल

माही की गूंज, पेटलावद। मंगलवार रात को बावड़ी-बरवेट मार्ग पर एक बड़ा हादसा हो गया, जिसमे ट्रेक्टर व यात्री बस की भीषण टक्कर हो गई, जिसमें बस ड्राइवर सहित यात्री घायल हुए है। बस बावड़ी से बरवेट की ओर जा रही थी जिसमे यात्री मौजूद थे। बताया जा रहा है कि, ट्रेक्टर बस में आकर घुस गया जिससे बस आगे से पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई है ओर ड्राइवर को गम्भीर चोट आई है, जिसे निजी वाहन की मदद से पेटलावद स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया था। साथ ही घायल यात्रियों को भी स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। वही ट्रेक्टर चालक मौके से फरार हो गया।

जिले में उत्साहपूर्वक मनाई जा रहीं भगवान बिरसा मुंडाजी की जयंती

माही की गूंज, झाबुआ। जनजाति विकास मंच द्वारा जिले के कुल 442 गावों में जनजाति समाज के युवाओं, तड़वी, पटेल, पूजारियों और महिलाओं के बीच अपने रिति-रिवाज, पारंपरिक गायन, गरबों के साथ भगवान बिरसा मुंडाजी जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई जा रही है। मंच के रतनसिंह डावर ने बताया कि जिससे जनजाति विकास मंच के ग्राम प्रमुखों ने गांव में जनजाति परंपरा को सुरक्षित रखने वाले तड़वियों का साफा बांधकर सम्मान भी किया। गांव के मान बिंदु आस्था का केंद्र सावन माता, बाबा देव, खेड़ूत माता मंदिर आदि स्थलों पर स्वछता कार्य चलाकर पूजा-अर्चना की। कई स्थानों पर ढोल-मांदल की थाप पर पारंपरिक नृत्य भी किए। सभी गांव के बुजुर्गों तथा युवाओं ने अपनी संस्कृति से अन्य संस्कृति में जाने वाले धमरंतरित हो रहे लोगों को सावधान होने की चेतावनी भी दी। प्रशासन ने भी जनजाति गौरव दिवस भगवान बिरसा मुंडाजी जयंती पर विभिन्न आयोजन किए।

कांग्रेस नेता को गिरफ्तार कर निकाला जुलूस

माही की गूंज, रतलाम।

चमारीया नाका क्षेत्र स्थित मेडिकल स्टोर संचालक द्वारा हमा नहीं देने पर उसके साथ दुकान के अंदर घुस कर लात-घुसो से मारपीट करने वाला पूर्व मंडी अध्यक्ष फकीर चंद चौधरी के पुत्र युवा कांग्रेस नेता संजय चौधरी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को पुलिस ने जुलूस निकालते हुए उसे पैदल ही त्रिपोलिया गेट से थाने तक लेकर आए, बाद में उसे कोर्ट में पेश किया, जहां उसे जमानत मिल गई है। माणक चौक थाना पुलिस के अनुसार आरोपी युवा कांग्रेसी नेता संजय चौधरी ने सोमवार की शाम को चमारिया नाका में स्थित मेडिकल संचालक राकेश पिता मुन्नालाल सकलेचा से हफ्ता वसूली के लिए राशि की मांग की थी, युवा कांग्रेस नेता अपने साथियों के साथ अवैध हफ्ता वसूली करने मेडिकल स्टोर पहुंचा था, सकलेचा ने माणक चौक पुलिस को बताया था कि, उसका चमारिया नाका क्षेत्र में मेडिकल स्टोर है, सोमवार की शाम मेडिकल स्टोर पर ही था इसी दौरान संजय चौधरी उसका दोस्त गोलू राठौड़ और उसके चार-पांच अन्य लोग पहुंचे इन लोगों ने आते ही दीपावली मनाने के लिए पैसे मांगे, इनकार किया तो यह लोग दुकान के अंदर घुस गए और उन्होंने मारपीट शुरू कर दी, इसी दौरान बेटी और पत्नी ने बचाने का काफी प्रयास किया, किंतु इन लोगों ने उनके साथ भी झुमा-झपटी की। पुलिस ने प्रकरण दर्ज करने के बाद में उसकी तलाशी शुरू की त्रिपोलिया गेट क्षेत्र से गिरफ्तार किया। माणक चौक पुलिस थाने के सब इंस्पेक्टर सत्येंद्र रघुवंशी ने बताया कि, प्रकरण दर्ज होने के बाद मंगलवार की सुबह सूचना मिली थी कि, आरोपी संजय चौधरी त्रिपोलियों गेट क्षेत्र में है, इस पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया, यहां से उसे थाने लाया गया और उसके बाद शाम को कोर्ट में पेश किया गया।

पम्प नहीं चलने से परेशान कृषकों ने कलेक्टर को की शिकायत

बिजली विभाग की मनमानी से माही नहर से जुड़े कृषक परेशान

माही की गूंज, पेटलावद।

जामली क्षेत्र में माही नहर के बिजली बिल भरवाने के लिए विद्युत मण्डल द्वारा किसानो पर दबाव बनाया जा रहा है, जबकी माही नहर के विद्युत कनेक्शन अप्रेल 2020 से बन्द हैं जिसके सभी कनेक्शन कटे हुए है। पिछले वर्ष नवम्बर 2019 के अन्तिम सप्ताह से नहर चालु हुई थी व मार्च 2020 के अन्तिम सप्ताह में बन्द कर दी गई थी, जो की मात्र तीन माह नहर का पानी व बिजली कनेक्शन दिया गया और विद्युत कनेक्शन के बिजली बिल नही भरने पर विद्युत मण्डल द्वारा किसानो के घर के विद्युत कनेक्शन काटने का दबाव बनाया जा रहां। उक्त नहर के बिजली कनेक्शन पर 24 घंटे बिजली मिलना थी पर किसानो को बिजली नही मिली फिर भी बिल पुरे वर्ष का भरवाने के लिए किसानो को मजबूर किया जा रहा। जबकी वर्तमान जामली क्षेत्र बिजली बिल के सम्बंध में ग्रामीणो ने जिला कलेक्टर को समस्या से अवगत करवाते हुए बताया कि, माही नहर की सारे डिपी बन्द है और पिछले आठ माह में नतो नहर चालु है और नही बिजली, फिर भी बिल भरने के लिए किसानो को मजबूर किया जा रहा। माही नहर के सिंचाई हेतु 40-40 किया जमीन के एक-एक रूप बनाए गए, प्रत्येक रूप में 8 से 12 किसान हैं। कुछ रूप की पाईपलाईन भी नहीं डाली गई, कई खेतो पर पिछले वर्ष भी पानी नहीं दिया गया, फिर भी बिजली बिल भरने के नोटिस दिए गए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि, समस्याओ के बारे में रायपुरिया सेक्टर के विद्युत मण्डल के सुपरवाईजर से बात की तो वह किसानो से नतो सिधे से बात करते हैं और तानाशाही रवेया अपनाते हैं।

माही परियोजना अधिकारीयों की लापरवाही से नही मिल रहा समय पर सिंचाई के लिए पानी

फसलों की सिंचाई के क्षेत्र में माही नहर का जाल करोड़ो के खर्च कर बिछाया गया लेकिन समय के साथ माही परियोजना के अधिकारियों की लापरवाही से धीरे-धीरे योजना दम तोड़ रही है, साल दर साल नहर से लाभांवित होने वाले कृषकों की संख्या मे कमी होती जा रही है, तो हर साल जगह-जगह नहर के पुटने से कृषको को नुकसानी भी उठानी पड़ रही है। ग्रामीणों ने शिकायत में बताया कि, विभाग द्वारा खेतो तक बिछाई गई पाइप लाईन भी पूरी तरह से खराब होकर जगह-जगह से फूटी हुई है। माही नहर फसलों की जीवनदायनीय बनी हुई है, लेकिन जर्जर होती नहरों और बिजली विभाग की मनमानी के कारण कृषकों को सिंचाई के लिए पानी से वंचित होना पड़ता है।

मुख्यमंत्री किसान कल्याण निधी के पंजियन 20 नवंम्बर तक पुर्ण करने हेतु मुस्तैद हुआ प्रशासन

माही की गूंज, खवासा।

किसानो को स्थाई सहयोग देने हेतु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधी के रूप में प्रतिवर्ष दो-दो हजार की तीन किस्तो में 6 हजार रूपए किसानो को स्थाई सहयोग देने हेतु योजना लागु की जिसे सभी किसानो ने उक योजना को सराहा और उसका लाभ भी किसानो को मिला। वही म.प्र. में 28 सिटो पर उपचुनाव के पुर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना की घोषणा करते ही दुसरे दिन से ही इस योजना पर किसानो को 4 हजार रूपए प्रतिवर्ष प्रदेश सरकार कि ओर से किसानो को स्थाई सहयोग देने हेतु त्वरीत पंजीयन कर प्रथम चरण का कार्य प्रारंभ कर दिया था वही अब 20 नवम्बर तक प्रथम चरण में जिन-जिन किसानो के नाम पोर्टल पर चड चुके है उनका पंजियन का कार्य पुर्ण करने हेतु जिला प्रशासन पुरी मुस्तैदी के साथ जुट चुका है।

खवासा क्षेत्र की बात करे तो टप्पा तहसील कार्यालय एवं पटवारी कक्ष पर सभी क्षेत्र के हल्का पटवारी उपस्थीत होकर आपरेटरो के सहयोग से प्रथम चरण के कार्य को 20 नवम्बर तक पुर्ण करने हेतु मुस्तैद होकर अपने कार्य में जुट कर कार्य कर रहे है। पटवारी रूपसिंग भुरिया ने गूंज को जानकारी देते हुए बताया कि, सरकार की योजना अनुसार मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत 4-4 हजार रूपए स्थाई सहयोग के रूप में प्रतिवर्ष दिए जाना है जिसके लिए जिन किसानो का नाम पोर्टल पर प्रथम चरण में चड चुके है उनका पंजियन किसान का फोटो खिचकर आवश्यक दस्तावेज के साथ 20 नवम्बर तक अनिवार्य रूप से पंजियन करना है, उक पंजियन कार्य पुर्ण करने हेतु पुरा पटवारी दल एवं कोटवाल के साथ आपरेटर तथा ग्राम पटेल सामुहिक रूप से जुडकर कार्य कर रहे है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422